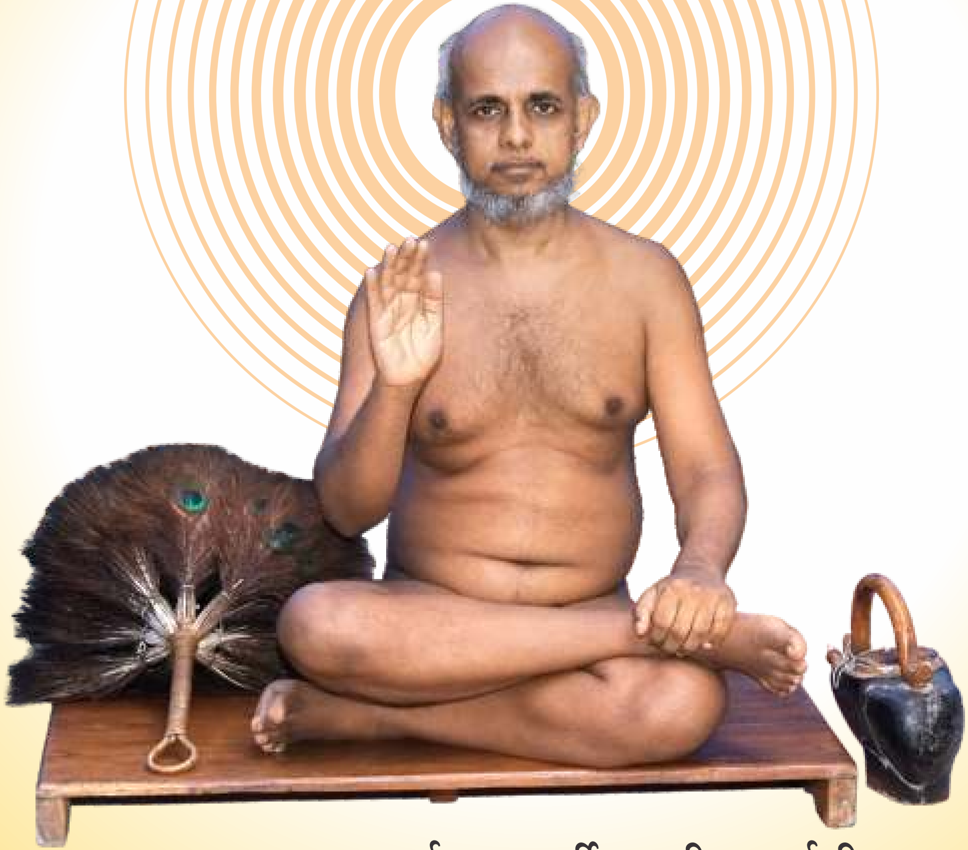

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

✻ जन्मदिवस 19–03–1971 ✻ मुनिदीक्षा–11–05–1989 ✻ आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद क्षायिक नवलब्धि विधान

कृतिकार :
परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्तिस्थान
विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

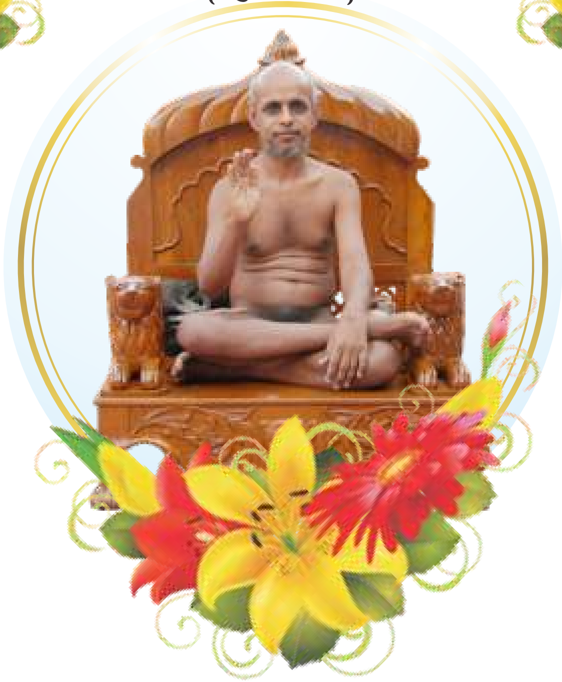

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

20-1-2014

विशद क्षायिक नवलब्धि विधान

नोट-रविव्रत के उद्यापन पर यह विधान अथवा श्री पारसनाथ विधान अवश्य करना चाहिए।

aM{`Vm

प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति - विशद क्षायिक नवलब्धि विधान

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, प्रज्ञाश्रमण
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2013 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी

सहयोग - आ.भक्तिभारती माताजी,क्षुल्लिका वात्सल्यभारती माता जी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी 9660996425, सपना दीदी, आरती दीदी,

प्राप्ति स्थल - 1

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर, कुआँ वाला जैनपुरी
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान ● मो.: 09416882301

4. लाल मंदिर, चाँदनी चौक, दिल्ली

मूल्य - 31/-

-: अर्थ सौजन्य : -

(1) श्रीमान् शशांक जैन धर्मराज जैन(सहारनपुर वाले) दिल्ली

(2) नितिनकुमार योगेशकुमार जैन
शिवशक्ति पैकेजिंग, ए-12, सेक्टर-2, रोहिणी, दिल्ली मो. 9212065003

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट , जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

शब्दों के सुमन

एकापि समर्थेयं जिन भक्ति दुर्गतिं निवारयुतं।
पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्ति श्रियं कृतिनः।।

समाधि भक्ति के अन्तर्गत कथन करते हुए आचार्यों ने कहा है इस भयभीत संसार से मुक्त होने के लिए यदि कोई है तो वह है जिनेन्द्र भगवान की भक्ति ही एक सहारा है जो भगवान को चाहता वह नारायण बन जाता है जो भगवान से चाहता है वह नारकी बनता है। आपको पता होगा एक पत्थर में भी चमत्कार है कि पत्थर में भगवान का नाम लिखकर पानी में डालने पर तैर जाता है जो बिना नाम के डालता है वह डूब जाता है। जो देव-शास्त्र-गुरु का सहारा लेता, उनके सिद्धांतों पर चलता है उसे भौतिक सुख तो ठीक परलौकिक सुख भी स्वतः मिल जाते हैं लेकिन प्रभु की भक्ति विनय सहित श्रद्धा के साथ स्वार्थ रहित होनी चाहिए।

जन्म-जन्म कृतं पापं, जन्म कोटि समार्जितं।
जन्म-मृत्यु-जरा मूलं, हन्यते जिन वंदनात्।।

भगवान की भाव सहित भक्ति करने से जन्म-जन्म के संचित पाप जन्म, जरा, मृत्यु को उत्पन्न करने वाले महापाप भी कट जाते हैं। मानतुंग आचार्य ने भक्तामर स्तोत्र के माध्यम से आदिनाथ की भक्ति वह कारागार से मुक्त हो गये वादिराज को भयानक कुष्ट रोग से पीड़ित थे, एकीभाव स्तोत्र की स्तुति की रोग से मुक्त हो गये। परम पूज्य आचार्य गुरुदेव विशदसागर महाराज ने अनेकों विधानों वृहद् एवं लघु रूप देकर उन्हें सुन्दर, सरल, भाषा में नये से नया रूप देकर अपनी लेखनी से अलंकृत किया। साथ 'क्षायिक नवलब्धि विधान' की रचना कर भक्ति करने का माध्यम दिया है ऐसे गुरुदेव की लेखनी एवं सरस्वती का वर्णन मैं अल्पज्ञ कहाँ कर सकती हूँ।

आचार्य भगवन् ! के द्वय चरणों में त्रय बार नमोस्तु।

मेरी आँसुओं की लकीरें, कब तकदीर बन गई।
गुरु की सेवा ही मेरी तजदीर बन गई।।
मैं तो घूमा रही थी यूं ही रेत पर उंगलियाँ।
ना जानै केसे मेरे गुरुवर की तस्वीर बन गई।।

– ब्र. सपना दीदी (संघस्थ आचार्य विशदसागरजी महाराज)

श्री लब्धिविधान व्रत कथा

प्रथम नमू जिन वीर पद, पुनि गुरु गौतम पाँय।
लब्धि विधान कथा कहूँ, शारद होहु सहाय।।

काशी देश में वाराणसी नाम की नगरी का महाप्रतापी विश्वसेन राजा था। उसकी रानी का नाम विशालनयना था, एक दिन राजा ने कौतुकपूर्ण हृदय से नाटक का खेल करवाया। नाटक के पात्रों ने राजा को प्रसन्नतार्थ अनेक प्रकार गीत, नृत्य, हावभाव, विभ्रमादिक पूर्वक नाटक का खेल खेलना आरम्भ कर दिया, सो राजा रानी और सब पुरजन अपने योग्य आसनों पर बैठकर सहर्ष अभिनय देखने लगे।

उन नाटक का पात्रों के विविध भेष और हावभावों से रानी का चित्त चंचल हो उठा, और वह चमरी और रंगों नामकी अपनी दो सखियों सहित घर से निकल पड़ी तथा कुसंग में पड़कर अपना शीलधर्मरूपी भूषण खो बैठी। वह ग्रामोग्राम भ्रमण करती हुई वेश्या कर्म करने लगी।

जीवों के भाव तथा कर्मों की गति विचित्र है। देखो रानी, रनवास के सुख छोड़कर गली-गली की कुत्ती हो गई। सत्य है, इन नाटकों से कितने घर नहीं उजड़े ? रानी जैसी को यह दशा हुई तो अन्य जनों का कहना ही क्या है ?

राजा भी अपनी प्रियतमा के वियोगजनित दुःख को न सह सकने के कारण पुत्र को राज्य देकर वन में चला गया और इष्टवियोग (आर्तध्यान) से मरकर हाथी हुआ, सो वन में भटकते-भटकते एक समय किसी पुण्य संयोग से श्री मुनिराज का दर्शन हो गया और धर्मबोध भी मिला, जिसे वह हाथी सम्यक्त्व को प्राप्त करके अणुव्रत पालन करने लगा। और आयु के अन्त में चया, पाटलीपुत्र नगर में महीचन्द्र नामका राजा हुआ।

यह महीचन्द्र राजा एक दिन वनक्रीड़ा को गया था। इसके पुण्योदय से वहाँ (उद्यान में) श्री मुनिराज के दर्शन हो गये। तब सविनय साष्टांग नमस्कार करके राजा धर्मश्रवण की इच्छा से वहाँ बैठ गया। इतने में कानी, कुबड़ी और कोढ़ी ऐसी तीन कन्याएँ अत्यन्त दुःखित हुई वहाँ आई। उन्हें देखकर राजा महीचन्द्र को मोह उत्पन्न हुआ, तब राजा ने श्रीगुरु से अपने मोह उत्पन्न होने का कारण पूछा।

तब श्री गुरु ने इनके भवांतर का सम्बन्ध कह सुनाया कि राजन् ! तब अब से तीसरे भव में बनारस का राजा विश्वसेन था और रानी तेरी विशालनयना थी, सो नाटक का

अभिनय देखते हुए नाटककार पात्रों के हावभावों से चंचलित होकर तेरी रानी अपनी रंगी और चमरी नामकी दो दासियों सहित निकल कर कुपथगामिनी हो गई।

सो वे तीनों वेश्याकर्म करती हुई एक समय किसी राजा के पास कुछ याचना को जा रही थी कि रास्ते में परम दिगम्बर मुनिराज को देखकर अपने कार्य के साधन में अपशुकन मानने लगी और रात्रि समय मुनिराज के पास आकर अपने घृणित स्वभावानुसार हावभाव दिखाने और मुनिराज के ध्यान में विघ्न करने लगी, परन्तु जैसे कोई धूल फेंककर सूर्य को मलीन नहीं कर सकता है, उसी प्रकार से वे कुलटाएँ श्री मुनिराज को किंचित् भी ध्यान से न चला सकीं। सत्य हैं क्या प्रलय की पावन कभी अचल सुमेरु को चला सकती है ?

स्त्री चरित्र के साथ-साथ स्त्रियों की प्यारी रात्रि भी पूर्ण हुई। प्रातःकाल हुआ। सूर्य उदय होते ही वे दुष्टनी विफल मनोरथ होकर वहाँ से चली गयीं और यहाँ मुनिराज के निश्चल ध्यान के कारण देवों ने जय-जयकार शब्द करके पंचाश्चर्य किये।

निदान वे तीनों मुनि को उपसर्ग करने के कारण गलित, कोढ़ को प्राप्त हुई। रूप, कला, सौन्दर्य सब नष्ट हो गया और आयु के अन्त में मरकर पाँचवें नरक गई। बहुत काल तक वहाँ से दुःख भोगकर उज्जैनी के पास ग्राम पलास नाम के एक गृहस्थ की पुत्रियाँ हुई हैं, सो छोटी अवस्था में माता-पिता मर गये।

पूर्व पाप के कारण ये तीनों प्रथम कुरुपां, कानी, कुबड़ी, कोढ़ी और तिसपर भी भूंड वचन बोलनेवाली हैं, इसलिये ग्राम सरे बाहर निकाल दी गई हैं। वहाँ से भटकती हुई यहाँ आई हैं और तू अपनी पट्टरानी के वियोग से दुःखित होकर मरा, सो हाथी हुआ, तब श्री मुनिराज के उपदेश से सम्यक्त्व सहित पंचाणुव्रत पालन करके मरा, सो स्वर्ग में देव हुआ और देव पर्याय से आकर यहाँ महीचन्द्र नाम का राजा हुआ है। सो इनका तेरा पूर्वजन्मों का सम्बन्ध होने से तुझे यह मोह हुआ है।

तब राजा ने कहा-महाराज ! क्या कोई उपाय ऐसा है कि जिससे ये कन्यायें पापों से छूटे ?

तब श्रीगुरु ने कहा-राजन् ! सुनो, यदि वे श्रद्धापूर्वक लब्धिविधान व्रत करें तो सहज ही इस पाप से छुटकारा पावेंगी। इस व्रत की विधि इस प्रकार है-

भादो, माघ और चैत्र सुदी एकम् से तीज तक यह व्रत एक वर्ष में ऐसे 5 वर्ष तक करें। पश्चात् उद्यापन करें अथवा दुगुना व्रत करे। व्रत के दिनों में या तो तेला करे या

एकांतर उपवास करे या एकासना ही नित्य करें और श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा का पंचामृताभिषेक पूर्वक पूजनार्चन करें।

तीनों काल सामायिक करें-**'ॐ ह्रीं महावीरस्वामीने नमः'** यह 108 जाप करें। जागरण और भजन करें।

उद्यापन की विधि- जब व्रत पूर्ण हो जाये, तब सकल संघ को भोजन करावे और संघ में चार प्रकार का दान करें। शास्त्रों का प्रचार करें, पूजन के उपकरण व शास्त्र श्री जिनालय में पधरावें इत्यादि।

इस प्रकार व्रत की विधि और फल सुनकर उन तीनों कन्याओं ने राजा की सहायता से व्रत पालन किया और समाधिमरण कर पाँचवें स्वर्ग में देव हुई। राजा महीचन्द्र भी दीक्षा धर तप करके स्वर्ग गया।

विशालनयना नाम रानी का जीव जो देव हुआ था, सो मगधदेश के वाडवनगर में काश्यप गौत्रीय सांडिल्य नाम ब्राह्मण की सांडिल्या स्त्री के गौतम नाम का पुत्र हुआ था तथा चमरी व रंगी के जीव भी देव पर्याय से चयकर मनुष्य हो तप कर उत्तम गति को प्राप्त हुए।

जब श्री महावीर भगवान को केवलज्ञान हुआ परन्तु वाणी नहीं खीरी इसका कारण इन्द्र ने जाना कि गणधर बिना वाणी नहीं खिरती है, सो इन्द्र गौतम ब्राह्मण के पास **'त्रैकाल्यं द्रव्य षटकं'** इत्यादि नवीन श्लोक बनाकर साधारण भेष में गया और उसका अर्थ पूछा-

जब गौतम उसका अर्थ लगाने में गड़बड़ाया तब इन्द्र उसे भगवान के समवशरण में ले आया, सो मानस्तम्भ देखते ही गौतम का मान भंग हो गया और उन्होंने प्रभु के सम्मुख जाकर नमस्कार करके दीक्षा ली। सो जिनकथित चारित्र के प्रभाव से उसे चारों ज्ञान हो गया और वह भगवान के गणधरों में प्रथम गणधर हुए, कितने काल जीवों को संबोधन किया और महावीर प्रभु के पश्चात् केवलज्ञान प्राप्त करके निर्वाण पद की प्राप्ति हुआ। उन गौतमस्वामी को हमारा नमस्कार हो।

लब्धि विधान व्रत फल थकी, विशाल नयना नार।
गणधर हो लह मोक्षपद, किये कर्म सब क्षार।।

संकलन : मुनि विशालसागर

20-1-2014

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव–शास्त्र–गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदिक, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नी, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरी का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्योः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा– पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख–शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाए गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व–पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा–कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता श्रेष्ठ प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तू पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति अरु धर्मादिक का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा- नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ ! हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ती पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

20-1-2014

क्षायिक नवलब्धि विधान

मंगलाचरण

दोहा- मंगलमय अर्हन्त जिन, मंगल सिद्ध महान्।
आचार्योपाध्याय साधुका, करते हम गुणगान।।

(छन्द)

जयति जय वीतराग विज्ञान, जयति जिन प्रतिमा चरण प्रणाम।
जयति जय सर्व धर्म शुभकार, पूज्य हैं जग में बारम्बार।।
जयति जय परमेष्ठी जिनधाम, जयति जिन प्रतिमा चरण प्रणाम।
जयति जय दिव्य ध्वनी मनहार, जयति जिन धर्म है तारणहार।।
जयति नव लब्धी मंगल रूप, जयति अर्हत् पद झुकते भूप।
जयति जय सर्व अमंगल हार, जयति जिन पद वन्दन शतवार।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

पीठिका

श्री नवलब्धि विधान लोक में, जग जीवों को मंगलकार।
जिसके द्वारा श्री जिनेन्द्र की, अर्चा होती भली प्रकार।।
पञ्च लब्धियाँ पाने हेतू, पाएँ हम पाँचों समवाय।
सम्यक्दर्शन मूल है जिसका, प्राप्त करें हम हे जिनराय !।।
पाँचों ही मिथ्यात्व त्यागकर, प्राप्त करें सद्दर्शन ज्ञान।
सम्यक् चारित्र युक्त बताया, रत्नत्रय का अनुपम यान।।
ऋद्धि सिद्धि दातार कहा है, जग में यह नव लब्धि विधान।
चमत्कार चिन्मय शुभकारी, सौख्य प्रदायक रहा महान !।।
क्षायिक दान प्रथम लब्धी है, द्वितीय क्षायिक लाभ महान !।
क्षायिक भोग तृतिय लब्धी है, है उपभोग चतुर्थ प्रधान।।
पञ्चम क्षायिक वीर लब्धि शुभ, छठी लब्धि समकित श्रद्धान।

सप्तम दर्शन लब्धि कहाई, अष्टम लब्धी केवलज्ञान ।।
नवम लब्धि चारित्र श्रेष्ठतम, सारे जग में रही प्रसिद्ध।
प्राप्त करें जो जीव लब्धियाँ, हो जाते वह प्राणी सिद्ध ।।
जैनागम का कथन श्रेष्ठतम, जिस पर करना है श्रद्धान।
प्रासुक शुद्ध द्रव्य लेकर यह, करना भाई सभी विधान ।।

दोहा- मंगलमय जीवन बने, मंगल हों परिणाम।
मंगलमय जिनराज पद, मेरा विशद प्रणाम ।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री नवलब्धि विधान पूजा

स्थापना

केवल रवि का उदय प्राप्त हो, अतः जगाएँ सद् श्रद्धान।
सम्यक् ज्ञानाचरण प्राप्त कर, नव लब्धी पाएँ भगवान ।।
दान लाभ भोगोपभोग शुभ, वीर प्राप्त हो क्षायिक दर्श।
क्षायिक दर्शन ज्ञान चरित पा, जागे अन्तर में उत्कर्ष ।।

दोहा- पा क्षायिक नव लब्धियाँ, प्राप्त करें शिव धाम।
आह्वानन् करते हृदय, करके विशद प्रणाम ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ताटंक छन्द)

सम्यक्ज्ञान अरी को पाकर, जन्म जरादिक रोग हरें।
अजर अमर अविनाशी पद पा, चेतन गुण का भोग करें ।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश ! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान !।।1 ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् श्रद्धा का चन्दन ले, भवाताप ज्वर नाश करें।
सिद्ध शुद्ध अविनाशी निर्मल, चेतन तत्त्व प्रकाश करें ।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश ! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान !।।2 ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् चारित्र के अक्षत से, अक्षय निधि पाने आये।
भव सिन्धू से पार हेतु जिन, गुण पूजा कर सुख पाये ।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश ! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान !।।3 ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय के पुष्प चढ़ाकर, शील सुगुण हम प्रगटाएँ।
कामबाण विध्वंश करें अब, महाशील पति बन जाएँ ।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश ! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान !।।4 ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् तपमय तप के चरु से, पूजा करके हर्षायें।
नाश करें हम क्षुधा वेदना, परम तृप्ति उर में पायें ।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश ! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान !।।5 ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद् आराधना के दीपक से, सम्यक्ज्ञान विकाश करें।
मोह कर्म करके विनाश अब, केवलज्ञान प्रकाश करें ।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश ! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान !।।6 ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्मों की धूप बनाकर, ध्यान अग्नि में दहन करें।
अष्ट कर्म परिपूर्ण नाश कर, सिद्ध सुपद को ग्रहण करें।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश ! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान !।।7।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयम के फल से हम, पूजा कर महिमा गाएँ।
अजर अमर पद पाकर के अब, सिद्धशिला पर बश जाएँ।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश ! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान !।।8।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नव द्रव्यों का अर्घ्य बनाकर, नव कोटी से यजन करें।
नव केवल लब्धी पाकर के, सिद्ध लोक को गमन करें।।
पूज रहे नव श्रेष्ठ लब्धियाँ, हे जिनेश ! तव चरणों आन।
प्राप्त करें अर्हन्त दशा हम, पूजा करके हे भगवान !।।9।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- हर्षभाव के साथ हम, करें प्रभू गुणगान।
शांतीधारा से विशद, जागे निज उपमान।। शान्तये शांतिधारा..।।

दोहा- पुष्पों की शुभ गंध से, महके भू आकाश।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, होवे ज्ञान प्रकाश।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा- जयमाला गाते यहाँ, हे जिनेन्द्र ! भगवान।
क्षायिक लब्धी प्राप्त कर, करें आत्म कल्याण।।

(वीर छन्द)

सदाचार को पाने वाले, सद् श्रावक कहलाते हैं।
सदाचार के द्वारा प्राणी, श्रेष्ठ सुपथ को पाते हैं।।

20-1-2014

सम्यक् श्रद्धा पाने वाले, भेद ज्ञान प्रगटाते हैं।
जिनश्रुत के अभ्यासी जग में, सम्यक्ज्ञान जगाते हैं।।
तत्त्व का निर्णय करने वाले, सम्यक् चारित पाते हैं।
सम्यक् तप की अग्नि में फिर, कर्म के पुञ्ज जलाते हैं।।
श्रावक बारह व्रत पाकर, श्रावक धर्म निभाते हैं।
अनुक्रम से ग्यारह प्रतिमाधर, श्रावक श्रेष्ठ कहाते हैं।।
क्षुल्लक ऐलक बनने वाले, मुनि पद का करते अभ्यास।
महाव्रती मुनि पद पाने की, सदा रखे जो मन में आस।।
मुनि प्रमत्त व्रत के धारी हो, ज्ञान-ध्यान-तप करते घोर।
अप्रमत्त व्रतधारी होकर, निज में होते भाव विभोर।।
अप्रमत्त सातिशय धारी, करते श्रेणी का प्रारम्भ।
अपूर्वकरण गुणस्थान से होता, शुक्ल ध्यान का शुभ आरम्भ।।
क्षायिक श्रेणी पाने वाले, निज गुण का नित करें विकाश।
यथाख्यात चारित्र प्राप्त कर, करें घातिया कर्म विनाश।।
फिर अरहंत दशा प्रगटाकर, केवलज्ञान जगाते हैं।
उसी समय क्षायिक नवलब्धी, स्वयं आप प्रगटाते हैं।।
आयुकाल पर्यन्त धरा पर, अबुद्धि पूर्वक करते योग।
मानों श्रेष्ठ लब्धियों का तो, बिन प्रयोजन होता योग।।
योग निरोध प्राप्त करते फिर, कर्म अघातिया करके क्षीण।
सिद्ध सुपद को पाकर निज के, ही स्वरूप में होते लीन।।
सादि अनन्त काल तक रहकर, निजानन्द रस करते दान।
अक्षय अनन्त सुख के धारी हो, कहलाते हैं सिद्ध महान्।।

दोहा- नव केवल शुभ लब्धियाँ, पाने श्रेष्ठ महान्।
सम्यक् चारित्र प्राप्त कर, करें आत्म का ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- बनकर के योगी प्रभू, पायें केवलज्ञान।
शिवपथ के राही बनें, करें स्वपर कल्याण।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री क्षायिक दानलब्धि पूजा-1

स्थापना

दान अन्तराय के क्षय होते, दान लब्धि होती है प्राप्त।
अभय दान पाते हैं प्राणी, सुख का सागर होता व्याप्त।।
शुक्ल ध्यान की अग्नि से कर, अन्तराय का पूर्ण विनाश।
कर्म घातिया के नशते ही, होता केवलज्ञान प्रकाश।।

दोहा- दान लब्धि हम पूजते, करने निज कल्याण।
आह्वानन् करते हृदय, पाने भेद विज्ञान।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छन्द)

शीतल जल की निर्मल धारा, हे प्रभु ! चरण चढ़ाते हैं।
जन्म जरादिक क्षय करने को, जिनवर के गुण गाते हैं।।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
'विशद' ज्ञान अब हमें प्राप्त हो, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री दानलब्धिधारकजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन मलयागिरि का, केसर में यह घिस लाए।
भवाताप का कर विनाश हम, शिवपद पाने को आए।।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
'विशद' ज्ञान अब हमें प्राप्त हो, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल धवल अखण्डित अक्षत, निर्मल नीर में धो लाए।
अक्षय पद के भाव बने मम्, अक्षय पद पाने आए।।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
'विशद' ज्ञान अब हमें प्राप्त हो, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प सुकोमल सुन्दर, यहाँ चढ़ाने को लाए।
काम रोग का योग नशाने, नाथ शरण में हम आए।।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
'विशद' ज्ञान अब हमें प्राप्त हो, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चेतन रस के सुचरु बनाकर, जिन चरणों में हम लाए।
क्षुधा व्याधि विध्वंश होय मम, आत्मतृप्ति पाने आए।।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
'विशद' ज्ञान अब हमें प्राप्त हो, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग-जगमग दीप जलाकर, जिन अर्चा करने लाए।
मोह महातम के विनाश को, नाथ शरण में हम आए।।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
'विशद' ज्ञान अब हमें प्राप्त हो, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपायन में दश धर्मों की, धूप श्रेष्ठ खेने लाए।
अष्ट कर्म के नष्ट हेतु हम, जिन पूजा करने आए।।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
'विशद' ज्ञान अब हमें प्राप्त हो, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस श्रेष्ठ फल ताजे अनुपम, रजत थाल में भर लाए।
दिव्य महाफल पाने को हम, फल पूजा करने आए।।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
'विशद' ज्ञान अब हमें प्राप्त हो, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य अपूर्व बना निज गुण का, भेंट चढ़ाने को लाए।
पद अनर्घ्य पाने हे स्वामी !, चरण शरण में हम आए।।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
'विशद' ज्ञान अब हमें प्राप्त हो, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा के लिए, लाए निर्मल तोय।
'विशद' शांति के कोष तुम, शांती दो अब मोय।।शान्तये शांतिधारा..
पुष्पाञ्जलि करने प्रभू, लाए सुरभित कंज।
अभयदान प्रभु दीजिए, नाश होय भव रंज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

दोहा- दान लब्धि क्षायिक रही, जग में महति महान्।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने क्षायिक दान।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौबोला छन्द)

मिथ्यात्वादिक सप्त व्यसन अरु, सप्त भयों का करना त्याग।
'विशद' धर्म शिवपद का दाता, जिसमें रखना तुम अनुराग।।
जिन उपदेश दिए यह शुभकर, जिसे प्राप्त करना अविराम।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र पद करें प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मिथ्यात्वादिकसप्तव्यसन सप्तभयनिराकरण-उपदेशक क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म वस्तु स्वभाव बताया, निज अनुभव रस हृदय जगे।
उभय लोक सुखकारी है जो, धर्म कार्य में जीव लगे।।
जिन उपदेश दिए यह शुभकर, जिसे प्राप्त करना अविराम।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र पद करें प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मसम्मुखीकरण-उपदेशक क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पञ्च अणुव्रत पालन करके, गुणव्रत शिक्षाव्रत पाएँ।
प्रतिमा धारण कर अनुक्रम से, शिव के राही बन जाएँ।।
जिन उपदेश दिए यह शुभकर, जिसे प्राप्त करना अविराम।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र पद करें प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अणुव्रत-उपदेशक क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधू के अट्ठाईस मूलगुण, धारण कर संयम पाएँ।
यथाख्यात चारित्र प्राप्त कर, मोक्ष मार्ग को अपनाएँ।।
जिन उपदेश दिए यह शुभकर, जिसे प्राप्त करना अविराम।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र पद करें प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्री महाव्रतादिक मूलगुण उपदेशक क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

मुनि स्थविर कल्पी होकर, शुद्ध आत्मा को ध्यायें।
सम्यक् तप के द्वारा क्षण-क्षण, कर्म निर्जरा हम पाएँ।।
जिन उपदेश दिए यह शुभकर, जिसे प्राप्त करना अविराम।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र पद करें प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं श्री स्थविरकल्पमुनि धर्मोपदेशक क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

शुक्ल ध्यान का शौर्य जगाकर, यथाख्यात चारित पायें।
श्रेण्यारोहण करके हम भी, अनन्त चतुष्टय प्रगटायें।।
जिन उपदेश दिए यह शुभकर, जिसे प्राप्त करना अविराम।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र पद करें प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं श्री यथाख्यातचारित्र-उपदेशक क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जिनकल्पी मुनि बनकर के हम, निज स्वरूप में रमण करें।
बाह्यभ्यन्तर परिग्रह तजकर, मोक्षमार्ग पर गमन करें।।
जिन उपदेश दिए यह शुभकर, जिसे प्राप्त करना अविराम।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र पद करें प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं श्री जिनकल्पमुनि धर्मोपदेशक क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

शुद्धातम का ध्यान करें नित, प्रकट करें गुण उपमातीत।
निज स्वभाव के चिन्तन में हम, समय करें अपना व्यतीत।।
जिन उपदेश दिए यह शुभकर, जिसे प्राप्त करना अविराम।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र पद करें प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्म-धर्मोपदेशक क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

शुक्ल ध्यान अविकल्प प्राप्त कर, प्रगटाएँ हम केवलज्ञान।
कर्मों से मुक्ती पाकर के, पाएँ हम भी पद निर्वाण।।
जिन उपदेश दिए यह शुभकर, जिसे प्राप्त करना अविराम।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र पद करें प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्मपद धर्मोपदेशक क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

महार्घ्य

सम्यक् श्रद्धा जागृत करके, पाना भाई भेद विज्ञान।
पर भावों से पृथक स्वयं को, शाश्वत सत्य त्रिकालिक ज्ञान।।
जो भी सिद्ध हुए हैं अब तक, इसी मार्ग को अपनाए।
ज्ञान ध्यान तप संयम पाकर, विशद ज्ञान को प्रगटाए।।
जिन उपदेश दिए यह शुभकर, जिसे प्राप्त करना अविराम।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र पद करें प्रणाम।।10।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारक जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- लोक अनादी यह रहा, धर्म अनंत त्रिकाल।
दानलब्धि की अब यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(वीर छन्द)

महामंत्र है काल अनादी, काल अनादी जिन अर्हन्त।
दान तीर्थ है काल अनादी, काल अनादी धर्म अनन्त।।

काल अनादी जीव लोक में, अष्ट कर्म से दुख पावें।
मिथ्याज्ञान के कारण प्राणी, चतुर्गती में भटकावें।।1।।

प्रबल पुण्य के योग से प्राणी, प्राप्त करें सम्यक् श्रद्धान।
देह जीव यह भिन्न-भिन्न है, पायें प्राणी सम्यक् ज्ञान।।
सम्यक् चारित पाने वाले, करते निज आतम का ध्यान।
कर्म निर्जरा करें सुतप से, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।।2।।

ज्ञान दर्शनावरण मोहनीय, अन्तराय का करते नाश।
निज स्वभाव में रमने वाले, करते पूर्ण विभाव विनाश।।
दान अन्तराय का विनाशकर, क्षायिक दानलब्धि पाते।
दिव्य देशना देने वाले, दाता आप कहे जाते।।3।।

आप रहे दातव्य ज्ञान के, जिसका होता नहीं है अन्त।
अतः ज्ञान स्वरूपी हे जिन !, कहलाते हो तुम भगवन्त।।
जितने सिद्ध हुए हैं अब तक, इसी मार्ग से युक्त हुए।
दर्श ज्ञान सुख वीर्य आदि जिन, गुण अनन्त संयुक्त हुए।।4।।

तीर्थंकर भी निज स्वभाव का, नित्य निरन्तर करते ध्यान।
रमण करें निज के स्वरूप में, स्वयं जगाते हैं उपमान।।
ज्ञान अतीन्द्रिय उपादेय है, और सभी कुछ जानो हेय।
ज्ञानानन्द स्वरूपी शाश्वत, शुद्ध आत्मा मानो श्रेय।।5।।

दोहा- दान लब्धि से लोक में, होय स्वपर उपकार।
जीवों के कल्याण में, बने 'विशद' आधार।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारकजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सर्व अमंगल नाश हों, हे कल्याण ! स्वरूप।
शिवपद के दाता प्रभू, चरण झुकें तव भूप।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री क्षायिक लाभलब्धि पूजा-2

स्थापना

क्षायिक लाभ लब्धि को पाकर, केवल रवि का करें प्रकाश।
लाभ अन्तराय कर्म नाशकर, कर्म घातिया करें विनाश।।
लब्धि प्राप्त जिनवर की पूजा, करने आये यहाँ महान्।
प्राप्त हमें भी हो यह लब्धी, उर में करते हैं आह्वान।।

दोहा- क्षायिक लब्धी श्रेष्ठ है, क्षायिक लब्धीवान।
क्षायिक लब्धी प्राप्त कर, पाएँ पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौबोला छन्द)

निर्मल शुद्ध आत्मा है मम्, निज स्वरूप ना लख पाए।
जन्म जरादिक के दुखों से, काल अनादी घबराए।।
क्षायिक लाभ लब्धी को पाकर, जिन चरणों श्रद्धा पायें।
तीन लोक में पूज्य जिनेश्वर, को हम निज उर से ध्यायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारक जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादिक के ताप रहित हम, रागद्वेष से हीन रहे।
किन्तु विकारों में झुलसे हैं, अतः अनेकों दुःख सहें।।
क्षायिक लाभ लब्धी को पाकर, जिन चरणों श्रद्धा पायें।
तीन लोक में पूज्य जिनेश्वर, को हम निज उर से ध्यायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारक जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय रूप अखण्डित आतम, उसे देख ना पाए हैं।
पर परिणति में उलझें निशदिन, अतः जगत भटकाए हैं।।
क्षायिक लाभ लब्धी को पाकर, जिन चरणों श्रद्धा पायें।
तीन लोक में पूज्य जिनेश्वर, को हम निज उर से ध्यायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारक जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों सम कोमल स्वरूप से, ज्ञान सुगन्ध ना पाई है।
अब तक मन इन्द्रिय विषयों, की दुर्गन्धी मन भाई है।।
क्षायिक दान लब्धि पाने हम, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
'विशद' ज्ञान अब हमें प्राप्त हो, सादर शीश झुकाते है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारक जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानानन्द स्वरूपी आतम, को क्यों क्षुधा सताती है।
षट्रस व्यंजन खाने पर भी, तृप्ति नहीं मिल पाती है।।
क्षायिक लाभ लब्धी को, पाकर जिन चरणों श्रद्धा पायें।
तीन लोक में पूज्य जिनेश्वर, को हम निज उर से ध्यायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारक जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम ही ज्ञानदीप है, उसको ना प्रजलाया है।
दीप जलाए हैं अनगिनते, मिटा नहीं अंधियारा है।।
क्षायिक लाभ लब्धी को, पाकर जिन चरणों श्रद्धा पायें।
तीन लोक में पूज्य जिनेश्वर, को हम निज उर से ध्यायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारक जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वरूप से भिन्न कर्म हैं, जड़ होकर भी दुख देते।
योगों की चेष्टा से उनके, दुख पाकर हम रो लेते।।
क्षायिक लाभ लब्धी को, पाकर जिन चरणों श्रद्धा पायें।
तीन लोक में पूज्य जिनेश्वर, को हम निज उर से ध्यायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारक जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज अनुभूति का फल अनुपम, कभी नहीं चरु पाया है।
कर्मों का फल पाकर हमने, काल अनन्त गँवाया है।।
क्षायिक लाभ लब्धी को, पाकर जिन चरणों श्रद्धा पायें।
तीन लोक में पूज्य जिनेश्वर, को हम निज उर से ध्यायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारक जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर पद पाकर इस जग के, तृप्त नहीं हो पाए हैं।
पद अनर्घ्य पाने अब शाश्वत, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।
क्षायिक लाभ लब्धी को, पाकर जिन चरणों श्रद्धा पायें।
तीन लोक में पूज्य जिनेश्वर, को हम निज उर से ध्यायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारक जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-भावशुद्धि भव नाशती, कहते हैं जिनराज।
शांतीधारा दे रहे, जिनवर के पद आज।। शान्तये शांतिधारा..
क्षायिक भावों से 'विशद', होता भव का नाश।
पुष्पाञ्जलि के भाव से, होवे ज्ञान प्रकाश।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

दोहा- भावों से शुद्धी करें, निज आतम की आज।
क्षायिक लब्धी प्राप्त कर, पाएँ शिवपद राज।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौबोला छन्द)

कषाय अनन्तानुबन्धी हर, मिथ्यातम का करें विनाश।
उपशम क्षयोपशम क्षायिक दर्शन, पाएँ केवलज्ञान प्रकाश।।
क्षायिक लाभ लब्धि को पाकर, प्राप्त करें हम क्षायिक ज्ञान।
गुण अनन्त को पाकर हम भी, पाएँ अनुपम पद निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं श्री क्षयोपशमलाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य तत्त्व में श्रद्धा रखकर, नव पदार्थ का पाएँ ज्ञान।
रत्नत्रय को हृदय धारकर, आत्म तत्त्व का हो रसपान।।
क्षायिक लाभ लब्धि को पाकर, प्राप्त करें हम क्षायिक ज्ञान।
गुण अनन्त को पाकर हम भी, पाएँ अनुपम पद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं श्री विशुद्धिलाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर जिनश्रुत जिन गुरुवर से, प्राप्त देशना होय महान्।
मोहकर्म का कर विनाश हम, प्राप्त करें सम्यक् श्रद्धान।।

क्षायिक लाभ लब्धि को पाकर, प्राप्त करें हम क्षायिक ज्ञान।
गुण अनन्त को पाकर हम भी, पाएँ अनुपम पद निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देशनालाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म बन्ध की स्थिति अन्तः, कोड़ाकोड़ी करें प्रणाम।
मिथ्यादिक सातों प्रकृतियाँ, नाश करें पाये सद्ज्ञान।।
क्षायिक लाभ लब्धि को पाकर, प्राप्त करें हम क्षायिक ज्ञान।
गुण अनन्त को पाकर हम भी, पाएँ अनुपम पद निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं श्री प्रायोग्यलाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करण लब्धि को पाकर के हम, करें शुद्ध अपने परिणाम।
सम्यक् ज्ञान ध्यान के द्वारा, पायें सिद्धशिला विश्राम।।
क्षायिक लाभ लब्धि को पाकर, प्राप्त करें हम क्षायिक ज्ञान।
गुण अनन्त को पाकर हम भी, पाएँ अनुपम पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं श्री करणलाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औदायिक भावों को नाशें, अधःकरण करके परिणाम।
अप्रमत्त सातिशय पाकर, बन जाएँ योगी निष्काम।।
क्षायिक लाभ लब्धि को पाकर, प्राप्त करें हम क्षायिक ज्ञान।
गुण अनन्त को पाकर हम भी, पाएँ अनुपम पद निर्वाण।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अधःकरणलाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लब्धि अपूर्वकरण के द्वारा, हों अपूर्व मेरे परिणाम।
क्षायिक श्रेणी पर आरोहण, होय स्वयं का करके ध्यान।।
क्षायिक लाभ लब्धि को पाकर, प्राप्त करें हम क्षायिक ज्ञान।
गुण अनन्त को पाकर हम भी, पाएँ अनुपम पद निर्वाण।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अपूर्वकरणलाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लब्धि अनिवृत्तिकरण प्राप्त कर, कर्मों का करना है नाश।
यथाख्यात चारित्र के द्वारा, पाना केवल ज्ञान प्रकाश।।

क्षायिक लाभ लब्धि को पाकर, प्राप्त करें हम क्षायिक ज्ञान।
गुण अनन्त को पाकर हम भी, पाएँ अनुपम पद निर्वाण।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अनिवृत्तिकरणलाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अधिकरण लब्धि को पाकर, परमातम का ध्यान करें।
विशद ज्ञान को पाकर क्षण में, कर्म श्रृंखला पूर्ण हरें।।
क्षायिक लाभ लब्धि को पाकर, प्राप्त करें हम क्षायिक ज्ञान।
गुण अनन्त को पाकर हम भी, पाएँ अनुपम पद निर्वाण।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अधिकरणलाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

उपादेय है ज्ञान अतीन्द्रिय, गुणानन्तमय जीव स्वभाव।
पञ्च परावर्तन से विरहित, जिसमें होता बन्धाभाव।।
निर्विकल्प सम रसी भावमय, जो विकार से रहा विहीन।
महाशांत अनुभव रस सागर, के आश्वादन में रहता लीन।।
अमल अनूप अतुल अविकारी, अविनाशी है सहजानन्द।
सहज सर्वदर्शी सर्वोत्तम, चिन्मय ध्याते परमानन्द।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- चिदानन्द चिन्तामणी, चिन्मय चित् स्वरूप।
जयमाला गाते विशद, जगतीपति सब भूप।।

(मत्त सवैया छन्द)

निर्धूम दीप सम जलकर के, जग को प्रकाश बाँटे क्षण-क्षण।
यह धरती सुरभित है जिनसे, हर्षाए इस जग का कण-कण।।
अन्तर में ज्ञान किरण जगते, मन का विकार बाहर भागे।
हो पूर्ण अहिंसामय जीवन, जब निज स्वभाव उर में जागे।।

मद मोह काम का हो विनाश, अज्ञान तिमिर भी नश जाएँ।
बाह्यन्तर हो संयम प्रकाश, निज परिणति निज में जब आएँ।।
निज में अपूर्व वैभव होता, निज में अपूर्व क्षमता जागे।
निज तत्त्व पूर्ण सुख सागर में, निज परिणति हो आगे-आगे।।
निज ज्ञान परम हितकारी है, निज दर्शन भव भ्रम हरण करें।
निज के चरित्र में लीन जीव, निज के गुण में ही रमण करें।।
निज रूप अनूप मनोहर है, चेतन निज में परिणमता है।
परिपूर्ण स्वभाव रहा अनुपम, सब ज्ञेय तत्त्व की क्षमता है।।
शुभ अशुभ विभावों को तजकर, अब शुद्ध स्वभाव जगाना है।
संयम तप परम अहिंसा से, निज के स्वरूप में आना है।।
शिवमार्ग प्रकट हो जाता है, जब निज स्वरूप का हो दर्शन।
प्रगटित हो जाता है क्षण में, जो ज्ञान चेतनामय लक्षण।।
निज ज्ञान ज्योति से चेतन की, चिद्रूप चन्द्रिका खिलती है।
सर्वज्ञ सर्वदर्शी चेतन चिन्मय, प्रियतम से मिलती है।।
निज में अपूर्व वैभवधारी, जो सिद्धलोक का वासी है।
उज्ज्वल प्रकाशमय अति निर्मल, चैतन्य पुञ्ज अविनाशी है।।

दोहा- हम दोषों के कोष हैं, अल्पमति हे नाथ !।
शक्ति जगाने हे प्रभू !, झुका रहे पद माथ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आडिल्य छंद)

निज अन्तर में श्रद्धा 'विशद' जगाए हैं।
रत्नत्रय जीवन में जो अपनाएँ हैं।।
निज स्वरूप में रमण करे जिन संत हैं।
क्षायिक लाभ लब्धिधारी अरहंत हैं।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री क्षायिक भोगलब्धि पूजा-3

स्थापना

क्षायिक भोग लब्धि प्रगटाने, भोगान्तराय का करें शमन।
कर्म घातिया का विनाश कर, पाएँ आतम ज्ञान चमन।।
अभ्यन्तर सुखवृद्धी करने, धारण करें दिगम्बर भेष।
आह्वानन करते निज उर में, विनय सहित हम हे परमेश।।

दोहा- कृपा करो प्रभु भक्त पर, तीर्थंकर जिनदेव।
श्वाँस चले जब तक मेरी, करें चरण की सेव।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

तृषा रोग से बचकर प्रभुवर, समता रस पीने आये।
आकुलता तजने हे स्वामी !, नीर चढ़ाने यह लाए।।
क्षायिक भोगलब्धि पाकर शुभ, अन्तराय का नाश करें।
सकल विमल कैवल्य ज्ञान का, निज में सतत् प्रकाश करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवाताप के नाश हेतु प्रभु, साम्य भाव हम प्रगटाएँ।
शांत स्वरूप जगाने को हम, चन्दन अर्चा को लाएँ।।
क्षायिक भोगलब्धि पाकर शुभ, अन्तराय का नाश करें।
सकल विमल कैवल्य ज्ञान का, निज में सतत् प्रकाश करें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय गुण की वृद्धी करने, ज्ञान ध्यान में रम जाएँ।
तव गुण के उपवन में रमने, अक्षत पूजा को लाएँ।।
क्षायिक भोगलब्धि पाकर शुभ, अन्तराय का नाश करें।
सकल विमल कैवल्य ज्ञान का, निज में सतत् प्रकाश करें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

गुणानन्त के सुमन खिलाने को, प्रभु की महिमा गाएँ।
ब्रह्मरूप की गंध प्राप्त हो, पुष्प चढ़ा पद हर्षाएँ।।
क्षायिक भोगलब्धि पाकर शुभ, अन्तराय का नाश करें।
सकल विमल कैवल्य ज्ञान का, निज में सतत् प्रकाश करें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तन मन का पोषण करने को, व्यंजन कई हमने खाए।
क्षुधा व्याधि हो शांतनाथ यह, चरु शुभ पूजा को लाए।।
क्षायिक भोगलब्धि पाकर शुभ, अन्तराय का नाश करें।
सकल विमल कैवल्य ज्ञान का, निज में सतत् प्रकाश करें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद ज्ञान का सूरज मेरा, आवरणित है हे स्वामी !।
ज्ञानदीप से प्रकट करें वह, चेतन रवि अन्तर्यामी।।
क्षायिक भोगलब्धि पाकर शुभ, अन्तराय का नाश करें।
सकल विमल कैवल्य ज्ञान का, निज में सतत् प्रकाश करें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

रागद्वेष संयोगज भावों से, कर्मों का बन्ध पड़ा।
धूप जलाकर नाश करें प्रभु, मुझ पर गहरा रंग चढ़ा।।
क्षायिक भोगलब्धि पाकर शुभ, अन्तराय का नाश करें।
सकल विमल कैवल्य ज्ञान का, निज में सतत् प्रकाश करें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की बगिया के फल, कभी ना हमने चख पाए।
अविनश्वर मुक्ती फल पाने, फल से पूजा को आए।।
क्षायिक भोगलब्धि पाकर शुभ, अन्तराय का नाश करें।
सकल विमल कैवल्य ज्ञान का, निज में सतत् प्रकाश करें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संचय करके जड़ द्रव्यों को, पाकर के हम अकुलाए।
पद अनर्घ्य पाने को हे जिन !, अर्घ्य चढ़ाने यह लाए।।
क्षायिक भोगलब्धि पाकर शुभ, अन्तराय का नाश करें।
सकल विमल कैवल्य ज्ञान का, निज में सतत् प्रकाश करें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-देते शांतीधार जो, पावें शांति अपार।
शांतभाव धारें स्वयं, पावें शुभ आचार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा-हृदय कमल की कर्णिका, पर तिष्ठो भगवान।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, करते उर आह्वान।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

सोरठा- पुष्पाञ्जलि के साथ, चढ़ा रहे हम अर्घ्य यह।
झुका रहे पद माथ, मुक्ती पाने हे प्रभू !।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(जोगीरासा छन्द)

मोह कर्म की सात प्रकृतियों का, उपशम हो जाए।
उपशम सम्यक् दर्शन पाकर, जीवन यह महकाए।।
क्षायिक भोग लब्धि को पाकर, निज गुण का रस पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर, के मोक्ष महल को जाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री प्रथमभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कषाय अप्रत्याख्यान नाशकर, देशव्रती बन जाएँ।
महाव्रती बनकर अनुक्रम से, मोक्ष महापद पाएँ।।
क्षायिक भोग लब्धि को पाकर, निज गुण का रस पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर, के मोक्ष महल को जाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री द्वितियभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्याख्यान कषाय नाश हम, पञ्च महाव्रत पाएँ।
होकर के निर्ग्रन्थ दिगम्बर, आतम ध्यान लगाएँ।।

क्षायिक भोग लब्धि को पाकर, निज गुण का रस पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर, के मोक्ष महल को जाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तृतियभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण स्थान प्रमत्त प्राप्त कर, संयम पाले निरतिचार।
आवश्यक में लीन रहे मन, रागद्वेष का हो परिहार।।
क्षायिक भोग लब्धि को पाकर, निज गुण का रस पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर, के मोक्ष महल को जाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्थभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है प्रमाद दुखकर इस जग में, उसका करके पूर्ण विनाश।
शुद्ध ध्यान के द्वारा करना, चेतन गुण का शीघ्र प्रकाश।।
क्षायिक भोग लब्धि को पाकर, निज गुण का रस पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर, के मोक्ष महल को जाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेणी आरोहण कर पाएँ, यथाख्यात चारित्र विशेष।
कर्म निर्जरा करके मुक्ती, पाना है मेरा उद्येश्य।।
क्षायिक भोग लब्धि को पाकर, निज गुण का रस पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर, के मोक्ष महल को जाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री षष्ठभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो विनाश सञ्ज्वलन कषाय का, क्षीण मोह हो गुण स्थान।
अन्तर्मुहूर्त काल में भाई, प्रकट होय फिर केवलज्ञान।।
क्षायिक भोग लब्धि को पाकर, निज गुण का रस पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर, के मोक्ष महल को जाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सप्तमभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अट्ठाइस प्रकृतियाँ मोहकर्म की, जिनका भी हो पूर्ण विनाश।
ज्ञान दर्शनावरण अन्तराय, के नशते हो ज्ञान प्रकाश।।

क्षायिक भोग लब्धि को पाकर, निज गुण का रस पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर, के मोक्ष महल को जाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती पाकर, व्युपरत क्रिया निवृत्ती हो ध्यान।
अष्ट कर्म का हो विनाश तब, पायें अनुपम पद निर्वाण।।
क्षायिक भोग लब्धि को पाकर, निज गुण का रस पाएँ।
शिवपथ के राही बनकर, के मोक्ष महल को जाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नवमभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

भव भँवर जाल में फँसने से, होता है भाव मरण क्षण-क्षण।
हो रागद्वेष परिणति विभाव, यह कर्मबन्ध का है लक्षण।।
अन्तर में ज्ञान प्रकाश जगे, निज परिणति हो आगे-आगे।
शुचिता मय त्याग तपस्या से, अन्तर का पूर्ण तिमिर भागे।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- भोग लब्धि को प्राप्त कर, निज स्वभाव में लीन।
जयमाला गाते 'विशद', सुपद मिले स्वाधीन।।

(सरसी छन्द)

रागद्वेष मिथ्यात्व मोह के, मेरे भाव हरो।
अविरति योग प्रमाद के द्वारा, आस्रव नहीं करो।।
आस्रव अशुचि दुखों का सागर, जग भटकाता है।
जीवों को जो अष्ट कर्म का, बन्ध कराता है।।1।।

भटक रहे हैं काल अनादी, तनिक विचार करो।
तत्त्व ज्ञान को पाकर अपनी, भूल सुधार करो।।

जिन दर्शन करके सद्दर्शन, हमको पाना है।
ज्ञान स्वभाव हमारा है जो, विशद जगाना है।।2।।

हिंसादिक पाँचों पापों के, तुम परिहारी हो।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने वाले, संयम धारी हो।।
संवरयुत हो कर्म निर्जरा, कर भव वास हरो।
अल्प समय में मुक्ती होगी, यह विश्वास करो।।3।।

पुण्य पाप के फल ने हमको, जग में भटकाया।
मोह कर्म की हमने अब तक, जानी ना माया।।
निज स्वरूप का निर्णय करके, निज को ध्याना है।
पर भावों से पृथक् आत्मा, को ही पाना है।।4।।

तीर्थंकर भी निज स्वभावरत, ज्ञान जगाते हैं।
जितने सिद्ध हुए हैं अब तक, निज को ध्याते हैं।।
चिदानन्द चित् चमत्कार, चिन्मय पद पाते हैं।
ज्ञान अतीन्द्रिय उपादेय है, जो प्रगटाते हैं।।5।।

केवलज्ञानी जिन तीर्थंकर, भोगलब्धि पाते।
अनुक्रम से वह कर्म नाशकर, सिद्धशिला जाते।।
यही भावना भाते हैं, हम 'विशद' भोग पाएँ।
कर्म नाशकर अपने, सारे मोक्ष महल जाएँ।।6।।

दोहा- पर भावों को छोड़कर, जागे निज स्वभाव।
हमको शिवपद प्राप्त हो, 'विशद' यही है चाव।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भोगों से मुक्ती मिले, पायें शिवपद योग।
जन्म जरादिक का प्रभो !, विनश जाय अब रोग।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री क्षायिक उपभोगलब्धि पूजा-4

स्थापना

अन्तराय का क्षय करके, उपभोग लब्धि हम प्रगटाएँ।
निज सर्वज्ञ दशा को पाकर, अर्हत् पदवी को पाएँ।।
तजकर के उपभोग जगत के, चेतन गुण में होय रमण।
श्री जिनवर की पूजा के फल, से पायें क्षायिक दर्शन।।

दोहा- दर्श किए जिनदेव का, जगे हृदय श्रद्धान।
अतः आज प्रभु चरण में, करते हम आह्वान्।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकउपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकउपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकउपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(हरिगीता छन्द)

निज चेतना को ज्ञान के जल, से धुलाने आए हैं।
हम रोग जन्मादिक मिटाने, नीर निर्मल लाए हैं।।
उपभोग क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते प्रभो !।
राही बने हम मोक्ष पथ के, शक्ति पाएँ हे विभो !।।1।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकउपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवताप का हम नाश करने, दर्श करते आपका।
निज में रमण से शीघ्र क्षय हो, आतमा से पाप का।।
उपभोग क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते प्रभो !।
राही बने हम मोक्ष पथ के, शक्ति पाएँ हे विभो !।।2।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकउपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय सुखों में लीन हो, अक्षय सुपद पाया नहीं।
निज आत्म का स्वरूप शाश्वत, वह हमें भाया नहीं।।
उपभोग क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते प्रभो !।
राही बने हम मोक्ष पथ के, शक्ति पाएँ हे विभो !।।3।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकउपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फँसकर विषय भोगों में चेतन, दुःख अगणित पा रहा।
अब काम रोग विनाश हो, जिससे अनादी दुख सहा।।
उपभोग क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते प्रभो !।
राही बने हम मोक्ष पथ के, शक्ति पाएँ हे विभो !।।4।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकउपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रोगी रहे हम क्षुधा तृष्णा, के अनादीकाल से।
अब क्षुधा रोग विनाश हो मम्, छूटे भव के जाल से।।
उपभोग क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते प्रभो !।
राही बने हम मोक्ष पथ के, शक्ति पाएँ हे विभो !।।5।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकउपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम देखते हैं दोष पर के, मोह का ये जाल है।
मिथ्या तिमिर हो नाश मेरा, बना जी का काल है।।
उपभोग क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते प्रभो !।
राही बने हम मोक्ष पथ के, शक्ति पाएँ हे विभो !।।6।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकउपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम विभावों में फँसे निज, को स्वयं ना जानते।
अब नाश करना कर्म अपने, जो सुगुण सब हानते।।
उपभोग क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते प्रभो !।
राही बने हम मोक्ष पथ के, शक्ति पाएँ हे विभो !।।7।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकउपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्म के फल में मगन हो, यह जगत भटकाए हैं।
अब मोक्ष फल पाने चरण में, सरस फल यह लाए हैं।।
उपभोग क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते प्रभो !।
राही बने हम मोक्ष पथ के, शक्ति पाएँ हे विभो !।।8।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकउपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दर्श करके आपका, सौभाग्य मेरा भी जगा।
शाश्वत सुपद मेरा स्वयं को, नाथ अब भाने लगा।।

उपभोग क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते प्रभो !।
राही बने हम मोक्ष पथ के, शक्ति पाएँ हे विभो !।।9।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकउपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सदाचार परिपूर्ण हो, करें लोक में वास।
शांतीधारा दे रहे, हो कर्मों का नाश।। शान्तये शांतिधारा..
अल्पज्ञों के ज्ञान में, बसते हो तुम नाथ।
अतः पूजते हम चरण, झुका रहे पद माथ।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

दोहा- जग वैभव क्षय से रहित, अक्षय ये जिनराज।
लब्धि क्षायिक उपभोग शुभ, पाएँ तव पद आज।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(चौपाई)

पहले अशुभ ध्यान को त्यागें, धर्म ध्यान करने में लागें।
लब्धि सहज उपभोग जगाएँ, निज स्वरूप में हम रम जाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अप्रशस्तध्यानवर्जितधर्मध्यानसहित उपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आज्ञा विचय ध्यान शुभ पाएँ, वीतराग स्वरूप जगाएँ।
लब्धि सहज उपभोग जगाएँ, निज स्वरूप में हम रम जाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आज्ञाविचयधर्मध्यानसहित उपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अपाय विचय शुभ ध्यान लगाएँ, निज स्वरूप में हम रम जाएँ।
लब्धि सहज उपभोग जगाएँ, निज स्वरूप में हम रम जाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अपायविचयधर्मध्यानसहित उपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

विपाक विचय पा निज को ध्यायें, धर्मध्यान करके हर्षाएँ।
लब्धि सहज उपभोग जगाएँ, निज स्वरूप में हम रम जाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विपाकविचयधर्मध्यानसहित उपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

विचय संस्थान को हम पाएँ, निज से निज को हम भी ध्याएँ।
लब्धि सहज उपभोग जगाएँ, निज स्वरूप में हम रम जाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री संस्थानविचयधर्मध्यानसहित उपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ध्यान पृथक्त्व एकत्व वीचारी, यथाख्यात चारित के धारी।
लब्धि सहज उपभोग जगाएँ, निज स्वरूप में हम रम जाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पृथक्त्वएकत्ववितर्कवीचारशुक्लधर्मध्यानसहित उपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती ध्यानी, होते अर्हत् केवलज्ञानी।
लब्धि सहज उपभोग जगाएँ, निज स्वरूप में हम रम जाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिशुक्लध्यानसहित उपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

व्युपरत क्रिया निवृत्ती ध्यानी, अयोग केवली होते ज्ञानी।
लब्धि सहज उपभोग जगाएँ, निज स्वरूप में हम रम जाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री व्युपरतक्रियानिवृत्तिशुक्लध्यानसहित उपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

धर्मशुक्ल द्वय ध्यान के धारी, निज को ध्याते हैं अविकारी।
लब्धि सहज उपभोग जगाएँ, निज स्वरूप में हम रम जाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मध्यानशुक्लध्यानभावसहित उपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

महार्घ्य

कर्म मलों को क्षय करने में, भाव तीर्थ का है स्थान।
व्रत संयम सार्थक है उनका, जिनने पाया भेद विज्ञान।।
पर में आतम बुद्धि के कारण, जीव दुखी रहता अनजान।
कर्मोंकृत दुख सहता है जो, रागद्वेष कर स्वयं प्रधान।।
सम्यक् श्रद्धा के अभाव में, सर्व क्रियाएँ होतीं व्यर्थ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ने हेतू, प्राणी होता है असमर्थ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकउपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- कर्मों के क्षय से जगे, जीवों का उपमान।
क्षायिक लब्धि उपभोग हम, पाएँ कर निज ध्यान।।

(विधाता छन्द)

अनादी काल से हमको, कर्म ने जग भ्रमाया है।
उदय मिथ्यात्व का पाया, ना चेतन चेत पाया है।।

शुभाशुभ कर्म के फल ने, हमें क्या दिन दिखाए हैं।
कभी हँसकर के दिन बीते, कभी रोकर बिताए हैं।।1।।
विभावी भाव करके हम, कर्म का बन्ध करते हैं।
उदय से कर्म के खोटे, कार्य से हम ना डरते हैं।।
कर्म आयू उदय आते, नरक पशु गति में जाते हैं।
वहाँ बध बंध छेदन के, असहनीय दुःख पाते हैं।।2।।
भाग्य से फिर मनुज भव पा, नहीं श्रद्धा जगाते हैं।
अतः स्वर्गादि में जाकर, भोग में मन लगाते हैं।।
परावर्तन पञ्च करके, ना भव से पार पाये हैं।
नहीं घबराए हैं इसने, पुनर्पुन जग भ्रमाए हैं।।3।।
जो शिवपथ के बने राही, प्रथम श्रद्धा जगाते हैं।
बनें वह भेद ज्ञानी फिर, 'विशद' चारित्र पाते हैं।।
मुनी निर्ग्रन्थ होकर के, स्वयं आतम को ध्याते हैं।
करे संवर सहित तप जो, कर्म अपने नशाते हैं।।4।।
बने शुद्धोपयोगी मुनि, निजानुभूति पाते हैं।
कर्मघाती नशाकर के, ज्ञान केवल जगाते हैं।।
जो त्रिभुवन के तिलक बनकर, मोक्ष सुख को ग्रहण करते।
परम निर्वाण पाते हैं, मुक्ति वधु को वरण करते।।5।।

दोहा- संयम तप जो धारते, करें कर्म का क्षार।
बन जाते सर्वज्ञ वह, क्षय करके संसार।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकउपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्राप्त होय लब्धी 'विशद', अब क्षायिक उपभोग।
काल अनादी नाश हो, जन्म जरा का रोग।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री क्षायिक वीर्यलब्धि पूजा-5

स्थापना

क्षायिक वीर्य लब्धि पाने को, अन्तराय का करें विनाश।
निज आतम का ध्यान लगाकर, करना है निजगुण में वास।।
जिन अर्चा कर निज अर्चा का, सम्यक् भाव जगाना है।
आह्वानन करके निज उर में, मुक्ती पथ को पाना है।।

दोहा- जिन पूजा जिन अर्चना, जिन भक्ती शुभकार।
जिनवर को ध्याये मिले, मुक्ती वधू का प्यार।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(तर्ज - माता तू दया...)

हमने भव सागर में, अगणित दुख पाये हैं।
जन्मादिक रोग नशे, प्रभु चरणों आए हैं।।
अब कर्म अन्तराय का, हम नाश करें स्वामी।
प्रभु वीर्य लब्धि पाके, बन जाएँ शिवगामी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्त जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव ताप नशाने को, चन्दन घिस लाए हैं।
आतम आनन्द मिले, तव द्वारे आए हैं।।
अब कर्म अन्तराय का, हम नाश करें स्वामी।
प्रभु वीर्य लब्धि पाके, बन जाएँ शिवगामी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्त जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर इस जग के, सारे पद गाए हैं।
अब अक्षय पद पाने, तव चरणों आए हैं।।
अब कर्म अन्तराय का, हम नाश करें स्वामी।
प्रभु वीर्य लब्धि पाके, बन जाएँ शिवगामी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्त जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम रोग द्वारा, सदियों से सताए हैं।
है ब्रह्म स्वरूप मेरा, वह पाने आए हैं।।
अब कर्म अन्तराय का, हम नाश करें स्वामी।
प्रभु वीर्य लब्धि पाके, बन जाएँ शिवगामी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्त जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा का क्षय करके, अब समरस पाना है।
चरु श्रेष्ठ चढ़ा करके, संज्ञाएँ नशाना है।।
अब कर्म अन्तराय का, हम नाश करें स्वामी।
प्रभु वीर्य लब्धि पाके, बन जाएँ शिवगामी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्त जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान नशाने को, यह दीप जलाते हैं।
हे नाथ ! आपकी हम, शुभ महिमा गाते हैं।।
अब कर्म अन्तराय का, हम नाश करें स्वामी।
प्रभु वीर्य लब्धि पाके, बन जाएँ शिवगामी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्त जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की शक्ती के, आगे हम हारे हैं।
अब नाश करें उनका, तव चरण सहारे हैं।।
अब कर्म अन्तराय का, हम नाश करें स्वामी।
प्रभु वीर्य लब्धि पाके, बन जाएँ शिवगामी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्त जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ फल में राग किया, सुख पाकर हर्षाए।
जो समता भाव धरें, वे शिवफल को पाए।।
अब कर्म अन्तराय का, हम नाश करें स्वामी।
प्रभु वीर्य लब्धि पाके, बन जाएँ शिवगामी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्त जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पर के आकर्षण से, भव-भव में भटकाए।
वसु द्रव्य बना करके, निज पद पाने आए।।

अब कर्म अन्तराय का, हम नाश करें स्वामी।
प्रभु वीर्य लब्धि पाके, बन जाएँ शिवगामी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्त जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीमय तुम हो प्रभू, शांती के आधार।
शांती पाने तव चरण, देते शांतीधार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा- राग रहित जिनदेव तुम, जग में पुष्प समान।
पुष्पाञ्जलि करते चरण, जागे मम् उपमान।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

सोरठा- भवि जीवों को आप, ले जाते शिवराह पर।
कट जाते सब पाप, निज आतम के ध्यान से।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(वीर छन्द)

ज्ञानावरण कर्म की स्थिति, कोड़ाकोड़ी सागर तीस।
हे स्वामी ! वह नाश करें हम, ऐसा दो हमको आशीष।।
क्षायिक वीर्य लब्धि को पाकर, अन्तराय का करें शमन।
नाथ ! आपके चरण कमल में, मेरा बारम्बार नमन।।1।।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानावरणकर्म त्रिंशत् कोड़ाकोड़ीसागरस्थितनाशकर्ता अनंत वीर्यलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण की स्थिति, कोड़ाकोड़ी सागर तीस।
कर्मनाश करके बन जाएँ, हम भी मोक्ष महल के ईश।।
क्षायिक वीर्य लब्धि को पाकर, अन्तराय का करें शमन।
नाथ ! आपके चरण कमल में, मेरा बारम्बार नमन।।2।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनावरणीकर्म त्रिंशत् कोड़ाकोड़ीसागरस्थितनाशकर्ता अनंत वीर्यलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनीय की स्थिति सागर, कोड़ाकोड़ी तीस प्रमाण।
करें नाश हम इन कर्मों को, पाएँ हम भी पद निर्वाण।।

क्षायिक वीर्य लब्धि को पाकर, अन्तराय का करें शमन।
नाथ ! आपके चरण कमल में, मेरा बारम्बार नमन।।3।।

ॐ ह्रीं श्री वेदनीयकर्म त्रिंशत् कोड़ाकोड़ीसागरस्थितनाशकर्ता अनंत वीर्यलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहनीय की स्थिति सागर, कोड़ा-कोड़ी सत्तर जान।
क्रूर कर्म को शीघ्र नशाकर, हम भी बन जाएँ भगवान।।
क्षायिक वीर्य लब्धि को पाकर, अन्तराय का करें शमन।
नाथ ! आपके चरण कमल में, मेरा बारम्बार नमन।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मोहनीयकर्म सप्तति कोड़ाकोड़ीसागरस्थितनाशकर्ता अनंत वीर्यलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयुकर्म की स्थिति सागर, गाई है तैंतीस प्रमाण।
मुक्ती पाकर आयुकर्म से, करें आत्मा का कल्याण।।
क्षायिक वीर्य लब्धि को पाकर, अन्तराय का करें शमन।
नाथ ! आपके चरण कमल में, मेरा बारम्बार नमन।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आयुकर्म त्रयस्त्रिंशत् कोड़ाकोड़ीसागरस्थितनाशकर्ता अनंत वीर्यलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नामकर्म की स्थिति सागर, कोड़ाकोड़ी जानो बीस।
कर्मों की सत्ता के नाशी, जगतीपति होते जगदीश।।
क्षायिक वीर्य लब्धि को पाकर, अन्तराय का करें शमन।
नाथ ! आपके चरण कमल में, मेरा बारम्बार नमन।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नामकर्म विंशति कोड़ाकोड़ीसागरस्थितनाशकर्ता अनंत वीर्यलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म की स्थिति सागर, कोड़ा-कोड़ी बीस प्रमाण।
कर्मों से मुक्ती पा जाएँ, भवसागर का हो अवशान।।
क्षायिक वीर्य लब्धि को पाकर, अन्तराय का करें शमन।
नाथ ! आपके चरण कमल में, मेरा बारम्बार नमन।।7।।

ॐ ह्रीं श्री गोत्रकर्म विंशति कोड़ाकोड़ीसागरस्थितनाशकर्ता अनंत वीर्यलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय की स्थिति सागर, कोड़ा-कोड़ी गाई तीस।
ध्यान लगाकर निज आतम का, पूर्ण नशाते जैन ऋशीष।।
क्षायिक वीर्य लब्धि को पाकर, अन्तराय का करें शमन।
नाथ आपके चरण कमल में, मेरा बारम्बार नमन।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अन्तरायकर्म त्रिंशत् कोड़ाकोड़ीसागरस्थितनाशकर्ता अनंत वीर्यलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नोकर्म नाश हित, करें आत्मा का हम ध्यान।
निज आतम की शक्ति जगाकर, पाएँ हम भी केवलज्ञान।।
क्षायिक वीर्य लब्धि को पाकर, अन्तराय का करें शमन।
नाथ आपके चरण कमल में, मेरा बारम्बार नमन।।9।।

ॐ ह्रीं श्री द्रव्यभाव नोकर्मनाशकर्ता अनंत वीर्यलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

महार्घ्य

अष्ट कर्म आठों अंगों में, बन्धन डालें काल अनादि।
जग में रहे भ्रमण के कारण, राग मोह मद मिथ्यात्वादि।।
यद्यपि शुद्ध स्वभाव हमारा, उससे हम अनजान रहे।
अतः कर्म के चतुगर्ती में, हमने कई घन घात सहे।।
मोहमयी परिणति को तज के, चरणों में सिरनाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, भाव से यहाँ चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिधारकजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- काल अनादी लोक में, फैल रहा है जाल।
वीर्य लब्धि की हम यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(पद्धरि छन्द)

जय वीर्य लब्धिधारी विशेष, हैं विशद ज्ञानधारी जिनेश।
जय परमौदारिक देहवान, जय समचतुष्क शुभ संस्थान।।
जय वीतराग विज्ञान रूप, जिनकी छवि सोहे अति अनूप।
चतुरानन होते हैं जिनेश, दर्शन करते सुर नर नरेश।।1।।

पाते हैं जिन कैवल्यज्ञान, इस जग को देते तत्त्व ज्ञान।
जय दोष अठारह रहित देव, जिनकर्म घातिया रहित एव।।
जय जन्म जरा मृत रोग नाश, कर क्षुधा तृषा विस्मय विनाश।
प्रभु अरति खेद मद मोह राग, भय निद्रा चिंता द्वेष त्याग।।2।।
हैं शोक स्वेद से भी विहीन, चौंतिस अतिशय जिनके अधीन।
दश जन्म समय करते सुदेव, दशज्ञान जगें पाते सुएव।।
देवोंकृत चौदह हैं विशेष, अतिशय पाते यह श्रीजिनेश।
वसु प्रातिहार्यधारी महान, जिन समवशरण में शोभमान।।3।।
सिंहासन की दुति है अनूप, प्रभु अधर शोभते निज स्वरूप।
है तरु अशोक शुभकर विशेष, ना रहे शोक का जहाँ लेश।।
है दिव्य ध्वनि ॐकारवान, जिसके द्वारा हो तत्त्व ज्ञान।
भामण्डल छवि वरणी ना जाय, शुभ सप्त भवों को जो दिखाय।।4।।
जय छत्र तीन सिर फिरत सार, जिन तीनलोकपति हैं उदार।
जय चँवर सुचौंसठ सुर ढुराँय, जो यश प्रभु का जग को दिखाँय।।
दुन्दुभि बाजे बजते अपार, जीवों को सुख दें हर प्रकार।
जय पुष्पवृष्टि भी करें देव, शत इन्द्र चरण में करें सेव।।5।।
जय दर्शज्ञान सुख वीर्यवान, ये नन्त चतुष्टय हैं महान।
प्रभु वीर्य लब्धि को आप धार, भव सिन्धु आप करते सुपार।।
अब मेरे मन में जगी आस, प्रभु शीघ्र बुलाओ मुझे पास।
कई भव्य दर्शकर हुए पार, अब 'विशद' भक्त ये खड़े द्वार।।6।।

घत्ता छंद- जिनपद में आये, ध्यान लगाए, महिमा गाये, हर्षाए।
शिवपुर हम जाएँ, ज्ञान जगाएँ, विशद मोक्ष फल हम पाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिधारक जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- वीर्य लब्धि पाए प्रभू, महिमा का ना पार।
भक्त बने तव चरण के, पाने शिव का द्वार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री क्षायिक सम्यग्दर्शन लब्धि पूजा-6

स्थापना

क्षायिक सम्यक् दर्शन लब्धी, प्राप्त करें हम हे भगवान।
ज्ञानाचरण प्राप्त कर क्रमशः, करें आतमा का हम ध्यान।।
सम्यक् श्रद्धा विनय से हे जिन !, पूजा आज रचाते हैं।
जिस पद को पाया प्रभु तुमने, वह पाने ललचाते हैं।।

दोहा- रत्नत्रय के कोष हैं, तीर्थंकर भगवान।
सम्यक् लब्धी के लिए, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ताटंक छन्द)

सम्यक् श्रद्धा की सरिता से, जल भरकर के लाए हैं।
जन्म जरादिक रोग नशाकर, निज गुण पाने आए हैं।।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाकर, मोक्ष मार्ग पर करें गमन।
यही भावना भाते हैं प्रभु, कर्मों का हो जाय शमन।।1।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान के तरुवर से यह, चन्दन घिसकर लाए हैं।
निज आतम में रमण हेतु भव, ताप नशाने आए हैं।।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाकर, मोक्ष मार्ग पर करें गमन।
यही भावना भाते हैं प्रभु, कर्मों का हो जाय शमन।।2।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव दुखहारी शिव सुखकारी, अक्षय अक्षत लाए हैं।
शास्वत अक्षय पद प्रगटाने, पूजा करने आए हैं।।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाकर, मोक्ष मार्ग पर करें गमन।
यही भावना भाते हैं प्रभु, कर्मों का हो जाय शमन।।3।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शील स्वभाव प्रकट करने हम, नाथ शरण में आए हैं।
कामबाण हो नाश प्रभू यह, पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाकर, मोक्ष मार्ग पर करें गमन।
यही भावना भाते हैं प्रभु, कर्मों का हो जाय शमन।।4।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म तृप्ति पाने हे भगवन् !, गुण प्रगटाने आये हैं।
क्षुधा नाश कर निज गुण पाने, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाकर, मोक्ष मार्ग पर करें गमन।
यही भावना भाते हैं प्रभु, कर्मों का हो जाय शमन।।5।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान दीप का हो प्रकाश, हम मोह नशाने आये हैं।
रोशन हो मेरा अंतरमन, दीप जलाकर लाए हैं।।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाकर, मोक्ष मार्ग पर करें गमन।
यही भावना भाते हैं प्रभु, कर्मों का हो जाय शमन।।6।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज श्रद्धा की धूपायन में, धूप जलाने लाए हैं।
कर्मों का हो नाश पूर्ण, निज तत्त्व जगाने आए हैं।।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाकर, मोक्ष मार्ग पर करें गमन।
यही भावना भाते हैं प्रभु, कर्मों का हो जाय शमन।।7।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रद्धा के उपवन से फल हम, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
मोक्ष महाफल पाने स्वामी, द्वार आपके आए हैं।।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाकर, मोक्ष मार्ग पर करें गमन।
यही भावना भाते हैं प्रभु, कर्मों का हो जाय शमन।।8।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के गुण का अर्घ्य बनाकर, पूजा करने आए हैं।
पद अनर्घ्य पाने चरणों यह, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।
क्षायिक सम्यक् दर्शन पाकर, मोक्ष मार्ग पर करें गमन।
यही भावना भाते हैं प्रभु, कर्मों का हो जाय शमन।।9।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–देने शांतीधार हम, भरके लाए नीर।
संयम पाने के लिए, पाया विशद शरीर।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा–पुष्पों से पुष्पाञ्जलि, करते हैं हम आज।
शिव पदवी पावे विशद, मिलकर सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

दोहा– अर्घ्य चढ़ाते हम यहाँ, विशद भाव के साथ।
सम्यक् क्षायिक लब्धि के, बन जाएँ हम नाथ।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(आडिल्य छन्द)

अधोलोक में नर्क सात पहिचानिए।
जैनागम में ऐसा गाया मानिए।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा विशद जगाएँगे।
क्षायिक दर्शन लब्धी पा शिव जाएँगे।।1।।

ॐ ह्रीं नरकादिभूमि–आयामदर्शकक्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दश प्रकार के देव भवनवासी कहे।
जिनके भवन प्रथम पृथ्वी में शुभ रहे।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा विशद जगाएँगे।
क्षायिक दर्शन लब्धी पा शिव जाएँगे।।2।।

ॐ ह्रीं भवनवासीदेवानां भूमिकायां आदिदर्शकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

व्यन्तरादि का मध्य लोक में वास है।
श्री जिनवर का कथन रहा यह खास है।।

सप्त तत्त्व में श्रद्धा विशद जगाएँगे।
क्षायिक दर्शन लब्धी पा शिव जाएँगे।।3।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवानां भूमिकायां आदिदर्शकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सूर्य चन्द्र ग्रह आदिक ज्योतिष देव हैं।
गगन मध्य जो करते गमन सदैव हैं।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा विशद जगाएँगे।
क्षायिक दर्शन लब्धी पा शिव जाएँगे।।4।।

ॐ ह्रीं ज्योतषीदेवानां भूमिकायां आदिदर्शकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऊर्ध्वलोक में सोलह स्वर्ग बताए हैं।
कल्पवासियों के जो धाम कहाए हैं।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा विशद जगाएँगे।
क्षायिक दर्शन लब्धी पा शिव जाएँगे।।5।।

ॐ ह्रीं कल्पवासीदेवानां पुण्यस्वर्गादिषोड़षस्वर्गदेवानां कायदर्शकक्षायिकसम्यक्दर्शन लब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नव ग्रैवेयक में रहते जो देव हैं।
तत्त्व ज्ञान में रहते लीन सदैव हैं।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा विशद जगाएँगे।
क्षायिक दर्शन लब्धी पा शिव जाएँगे।।6।।

ॐ ह्रीं ग्रैवेयकवासीदेवानां आयुआदिदर्शकक्षायिकसम्यक्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव अनुदिश अरु पञ्च अनुत्तर में अहा।
सम्यक् दृष्टी गुण, उनका अनुपम कहा।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा विशद जगाएँगे।
क्षायिक दर्शन लब्धी पा शिव जाएँगे।।7।।

ॐ ह्रीं नव-अनुदिशिपंचोत्तरभूमिकानां अहमिन्द्रदेवानां आयुआदिदर्शकक्षायिक-सम्यक्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम भूपर सिद्ध लोक पहिचानिए।
सुखानन्त पा सिद्ध रहे यह मानिए।।

सप्त तत्त्व में श्रद्धा विशद जगाएँगे।
क्षायिक दर्शन लब्धी पा शिव जाएँगे।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टममोक्षभूमिकावासीसिद्धानां दर्शकक्षायिकसम्यक्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह द्रव्यों से युक्त लोक यह जानिए।
बाहर है आकाश मात्र पहिचानिए।।
सप्त तत्त्व में श्रद्धा विशद जगाएँगे।
क्षायिक दर्शन लब्धी पा शिव जाएँगे।।9।।

ॐ ह्रीं लोकाकाश-अलोकाकाशे समस्तद्रव्यदर्शकक्षायिकसम्यक्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

जड़ चेतन का भेद जानकर, करते जो निश्चल श्रद्धान।
तत्त्वों में श्रद्धा होने से, होता है निज पर का ज्ञान।।
निर्विकल्प निश्चल समाधि से, निज आतम का हो आनन्द।
अविनाशी परिपूर्ण अतीन्द्रिय, हो विनाश करते सब द्वन्द।।
क्षायिक दर्शन लब्धी पाकर, हुए आप हे जिन ! स्वाधीन।
यही भावना भाते हैं हम, रहें आपके गुण में लीन।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- क्षायिक दर्शनलब्धि पा, पाएँ शिव सोपान।
जयमाला गाते यहाँ, नत हो हे भगवान !।।

(चाल छन्द)

जय तीर्थंकर जिन स्वामी, तुम हो त्रिभुवन पतिनामी।
सुरपति नरपति तुम ध्याते, निज भावों के फल पाते।।
तुमने श्रद्धान जगाया, तव सम्यक् तप को पाया।
जाना संसार असारा, तुमने संयम को धारा।।1।।

सोलहकारण तुम भाये, तीर्थंकर प्रकृति पाए।
प्रभु आप हुए अवतारी, फिर बने प्रभू अनगारी।।
तप करके कर्म खिपाए, प्रभु केवलज्ञान जगाए।
धनपति सुर आज्ञा पावे, शुभ समवशरण बनवावे।।2।।
तुम इष्ट परम हितकारी, तव पद में ढोक हमारी।
तुमको हमने ना पाया, दुर्भाग्य ने हमें सताया।।
सौभाग्य उदय अब पाये, जो शरण आपकी आये।
तुम हो भव कष्ट निवारण, तुम ही भवसागर तारण।।3।।
तुम ही मंगल दुखहरता, तुम लोकोत्तम सुख करता।
तुम शरणागत कहलाए, जग को शिवमार्ग दिखाए।।
प्रभु अनन्त चतुष्टय पाये, पद अमल अचल प्रगटाए।
महिमा तुम अगम अपारी, कह सके कौन वह सारी।।4।।
तुम परम दयालू स्वामी, कहलाते अन्तर्यामी।
तव चरण शरण हम पाएँ, जब तक मुक्ती ना पाएँ।।
यह विशद भावना भाते, पद सादर शीश झुकाते।
अब आई मेरी बारी, शिवपद दो हे त्रिपुरारी !।।5।।
हम जानी तव प्रभुताई, अतएव शरण तव पाई।
भव-भव में तुमको पाएँ, तुमरे ही गुण हम ध्यायें।।
बन जाएँ यही सहारे, शिवपद के लिए हमारे।
ना तुमको प्रभू भुलाएँ, जब तक मुक्ती ना पाएँ।।6।।

धत्ता छंद- गाई गुणमाला, प्रभू विशाला, ऋद्धि वृद्धि कर सुखकारी।
तुमको हम ध्यायें, शिवपद पाएँ, बने विशद हम अविकारी।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यक्दर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- दर्शन लब्धी प्राप्त जिन, का दर्शन शुभकार।
जो सद् भक्तों के लिए, होता तारणहार।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

20-1-2014

श्री क्षायिक दर्शन लब्धि पूजा-7

स्थापना

क्षायिक दर्शन लब्धी पाते, प्रगटाते जो केवलज्ञान।
कर्म घातिया के नाशी जिन, तीन लोक में रहे महान।।
लोकालोक प्रकाशक पाते, केवल दर्शन जिन भगवान।
दर्शन ज्ञान सुधामृत पाने, करते हम उर में आह्वान।।

दोहा- कर्म दर्शनावरण का, करना पूर्ण विनाश।
विशद ज्ञान पाकर हमें, पाना शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(मत्त सवैया छन्द)

काल अनादी जन्म मरण का, लगा हुआ काजल है।
जिसको धोने में समर्थ, संयम सरिता का जल है।।
कर्म दर्शनावरण नाशकर, क्षायिक दर्शन पाएँ।
भ्रमण मैटकर के हम भव का, मोक्ष नगर को जाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आशाओं के जंगल में हम, कब से भटक रहे हैं।
दर-दर माथा राग द्वेषकर, चिर से पटक रहे हैं।।
कर्म दर्शनावरण नाशकर, क्षायिक दर्शन पाएँ।
भ्रमण मैटकर के हम भव का, मोक्ष नगर को जाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत कुछ भी दिखा नहीं, ना धन दौलत ना घर है।
आकुलता देने वाले सब, पराधीन हैं पर हैं।।
कर्म दर्शनावरण नाशकर, क्षायिक दर्शन पाएँ।
भ्रमण मैटकर के हम भव का, मोक्ष नगर को जाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव के बाण ने सारा, जग भयभीत किया है।
तुमने निज बल से हे प्रभु जी, उसको जीत लिया है।।
कर्म दर्शनावरण नाशकर, क्षायिक दर्शन पाएँ।
भ्रमण मैटकर के हम भव का, मोक्ष नगर को जाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा रोग से पीड़ित हो यह, मन भयभीत रहा है।
उसे मिटाने में ही सारा, जीवन बीत रहा है।।
कर्म दर्शनावरण नाशकर, क्षायिक दर्शन पाएँ।
भ्रमण मैटकर के हम भव का, मोक्ष नगर को जाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यातम है काल अनादी, भ्रमण कराने वाला।
ज्ञान कला से हे प्रभु ! तुमने, वह निरस्त डाला।।
कर्म दर्शनावरण नाशकर, क्षायिक दर्शन पाएँ।
भ्रमण मैटकर के हम भव का, मोक्ष नगर को जाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म के कारण मेरा, आतम हुआ विकारी।
तृष्णा के कारण से जग यह, भ्रमता बना भिखारी।।
कर्म दर्शनावरण नाशकर, क्षायिक दर्शन पाएँ।
भ्रमण मैटकर के हम भव का, मोक्ष नगर को जाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल के अभिलाषी इस मन ने, कर्मों का फल पाया।
कोटि उपाय किए हैं लेकिन, चली एक ना माया।।
कर्म दर्शनावरण नाशकर, क्षायिक दर्शन पाएँ।
भ्रमण मैटकर के हम भव का, मोक्ष नगर को जाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन तन्दुल आदिक से, हमने अर्घ्य बनाया।
पद अनर्घ पाने का, हे जिन ! भाव बना मैं लाया।।
कर्म दर्शनावरण नाशकर, क्षायिक दर्शन पाएँ।
भ्रमण मैटकर के हम भव का, मोक्ष नगर को जाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– देते शांतीधार जो, वे पाते शिवधाम।
शिवपथ के राही बनें, होवे जग में नाम।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा– पुष्पाञ्जलि जो भी करें, धार हृदय श्रद्धान।
क्षायिक दर्शन प्राप्त कर, पावें वे निर्वाण।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

दोहा– क्षायिक दर्शन लब्धि के, चढ़ा रहे हम अर्घ्य।
पाकर क्षायिक दर्श हम, पाएँ सुपद अनर्घ्य।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(ताटंक छन्द)

अधोलोक में नीचे-नीचे, सात नरक बतलाए हैं।
केवलज्ञान के द्वारा जिनवर, ने आगम में गाए हैं।।
दर्शन लब्धी धारी जिनवर, ज्ञाता दृष्टा रहे महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं हम भी गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नरकादिभूमि-आयामदर्शक क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असुरादिक दश भेद कहे हैं, भवनवासि देवों के खास।
वह साक्षात् देखने वाले, दर्शन लब्धी जिनके पास।।
दर्शन लब्धी धारी जिनवर, ज्ञाता दृष्टा रहे महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं हम भी गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भवनवासी देवानां भूमिका आदिदर्शक क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यन्तरादि देवों का भाई, मध्य लोक में होता वास।
जिन दर्शन कर सम्यक् दर्शन, पाके करते ज्ञान प्रकाश।।
दर्शन लब्धी धारी जिनवर, ज्ञाता दृष्टा रहे महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं हम भी गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री व्यंतरदेवानां भूमिकायां आदिदर्शक क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद ज्योतिषवासी के, सूर्य चन्द्र आदिक शुभकार।
करें परिक्रमा ढाई द्वीप में, सदा चमकते हैं मनहार।।
दर्शन लब्धी धारी जिनवर, ज्ञाता दृष्टा रहे महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं हम भी गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री ज्योतिषीदेवानां भूमिकायां आदिदर्शक क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्ध्व लोक में स्वर्ग बताए, ऊपर-ऊपर महति महान।
जिनवाणी के द्वारा होता, भवि जीवों को जिसका ज्ञान।।
दर्शन लब्धी धारी जिनवर, ज्ञाता दृष्टा रहे महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं हम भी गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं श्री कल्पवासीदेवानां पुण्यस्वर्गादिषोडषस्वर्गदेवानांकायदर्शक क्षायिकदर्शन-लब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव ग्रैवेयक ऊर्ध्य मध्य अरु, अधः बताए तीन विभाग।
लीन रहें जो तत्त्व ज्ञान में, ज्ञान से जिनका है अनुराग।।
दर्शन लब्धी धारी जिनवर, ज्ञाता दृष्टा रहे महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं हम भी गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री ग्रैवेयकवासीदेवानां आयुआदिदर्शक क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव अनुदिश पञ्चानुत्तर वासी, होते हैं अहमिंद्र विशेष।
चरम देह दो पाने वाले, ज्ञानी होते हैं अवशेष।।
दर्शन लब्धी धारी जिनवर, ज्ञाता दृष्टा रहे महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं हम भी गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नव-अनुदिशिपंचोत्तर भूमिकानां अहमिन्द्र देवानां आयुआदि आदिदर्शक क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वसुधा सिद्ध शिला है, नाम रहा ईशत् प्राग्भार।
सिद्धों का है वास जहाँ पर, शोभित होती चन्द्राकार।।
दर्शन लब्धी धारी जिनवर, ज्ञाता दृष्टा रहे महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं हम भी गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टममोक्षभूमिकावासी सिद्धानां क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह द्रव्यों से भरा हुआ जो, कहलाता है लोकाकाश।
उसके बाहर फैल रहा है, सभी ओर भाई आकाश।।
दर्शन लब्धी धारी जिनवर, ज्ञाता दृष्टा रहे महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं हम भी गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं श्री लोकाकाश-अलोकाकाशेसमस्तद्रव्यदर्शक क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

रत्नत्रय निधि भव्य जीव को, सर्व ऋद्धियाँ करें प्रदान।
निर्विकल्प निश्चल समाधि धर, सर्व सिद्धियाँ पाएँ महान।।
रसिक रहे जो ज्ञान चेतना, के वह पाते केवल ज्ञान।
लोकालोक विशद हो जाता, क्षण में उनको ज्योर्तिमान।।
दर्शन लब्धी धारी जिनवर, ज्ञाता दृष्टा रहे महान।
जिनके चरणों अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं हम भी गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- दर्शन लब्धी प्राप्त कर, पाते केवल ज्ञान।
जयमाला गाएँ विशद, वे पावें निर्वाण।।

(मोतियादाम छन्द)

लब्धि दर्शन जानो शुभकार, प्राप्त करते साधू अनगार।
प्राप्त करके सद्दर्शन ज्ञान, पालकर चारित करते ध्यान।।
नाशकर सब संकल्प विकल्प, छोड़ते तीन योग से जल्प।
प्राप्त करते तत्त्वों का सार, ध्यान का लेकर के आधार।।
अशुभ का छोड़ हृदय से भाव, प्रकट करते जो निज स्वभाव।
हृदय में जागे जिस क्षण बोध, तुरत हो जाता आस्रव रोध।।
होय ज्ञानोदधि में अवगाह, रहे ना मन में कोई चाह।
राग की छाया होय विलीन, स्वयं में हो जावें जो लीन।।
रमण हो चित् आतम में शुद्ध, जीव वह बन जाते हैं बुद्ध।
मोह की होय उष्णता हीन, प्राप्त करने को लक्ष्य प्रवीण।।
नाशकर के वह आठों कर्म, विशद हो जाता है निष्कर्म।
बनाए सिद्ध शिला पर धाम, स्वयं हो जाए जीव अकाम।।
पूर्णकर भवसागर का अंत, बने वह मुक्ति रमा का कंत।
मोक्ष पाता है सादि अनन्त, बढ़ो वह पद पाने को संत।।
हृदय में जागी हे प्रभु ! आश, चलेगी जब तक मेरी श्वाँस।
'विशद' हो उर में ज्ञान प्रकाश, प्राप्त हो हमको शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- कर्म दर्शनावरण का, करके पूर्ण विनाश।
क्षायिक दर्शन प्राप्त हो, भव से हो अवकाश।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री क्षायिक ज्ञानलब्धि पूजा-8

स्थापना

क्षायिक ज्ञान लब्धि के धारी, हुए जहाँ में महति महान।
त्रेसठ कर्म प्रकृतियाँ नाशी, कर्म घातिया की कर हान।।
लोकालोक प्रकाशी पाया, हे प्रभु तुमने केवलज्ञान।
हम निज को आलोकित करने, उर में करते हैं आह्वान।।

दोहा- कर्मों का क्षय कर प्रभू, पाना क्षायिक ज्ञान।
अतः आपका भक्ति से, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

उज्ज्वल क्षीर समान सुन्दर, नीर निर्मल लीजिए।
जिनदेव के चरणों विनत हो, धार त्रय शुभ दीजिए।।
हम ज्ञान क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते सही।
अब छोड़कर जगवास हे जिन, प्राप्त हो अष्टम मही।।1।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सुगन्धित गंध मिश्रित, यह घिसाया भाव से।
जिनदेव के चरणों विनत हो, हम चढ़ाते चाव से।।
हम ज्ञान क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते सही।
अब छोड़कर जगवास हे जिन, प्राप्त हो अष्टम मही।।2।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अखण्डित धवल तन्दुल, थाल में भर लाए हैं।
जिनदेव के चरणों विनत हो, हम चढ़ाने आए हैं।।
हम ज्ञान क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते सही।
अब छोड़कर जगवास हे जिन, प्राप्त हो अष्टम मही।।3।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित सुगन्धित पुष्प ताजे, की बनाई माल है।
कामबाण विनाश हेतू, गा रहे गुणमाल हैं।।
हम ज्ञान क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते सही।
अब छोड़कर जगवास हे जिन, प्राप्त हो अष्टम मही।।4।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य ताजे सरस अनुपम, यह बनाकर लाए हैं।
हम क्षुधा रोग विनाश कारण, पूजने को आए हैं।।
हम ज्ञान क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते सही।
अब छोड़कर जगवास हे जिन, प्राप्त हो अष्टम मही।।5।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमयी दीप प्रजाल तमहर, मोहतम को नाशते।
अज्ञान नाशक हैं जहाँ में, सुगुण श्रेष्ठ प्रकाशते।।
हम ज्ञान क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते सही।
अब छोड़कर जगवास हे जिन, प्राप्त हो अष्टम मही।।6।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध मिश्रित धूप ताजी, अग्नि में हम जारते।
हे नाथ ! तुम हो कर्मनाशी, जग को भव से तारते।।
हम ज्ञान क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते सही।
अब छोड़कर जगवास हे जिन, प्राप्त हो अष्टम मही।।7।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम पिस्ता आदि फल यह, मोक्षपद दायक कहे।
अब मोक्ष फल पायें प्रभू यह, विनय चरणों कर रहे।।
हम ज्ञान क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते सही।
अब छोड़कर जगवास हे जिन, प्राप्त हो अष्टम मही।।8।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत फूल चरु शुभ, दीप धूप सुफल लिए।
अनुपम बनाया अर्घ्य हमने, आज पूजा के लिए।।
हम ज्ञान क्षायिक लब्धि पाने, अर्चना करते सही।
अब छोड़कर जगवास हे जिन, प्राप्त हो अष्टम मही।।9।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–आतम शांती के लिए, पूज रहे जिन पाद।
शांतीधारा दे रहे, मिटे मरण उत्पाद।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा–हे जिनेन्द्र तव चरण की, पूजा है सुखकार।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने भवदधि पार।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

सोरठा– पायें ज्ञान अनन्त, क्षायिक लब्धी प्राप्त कर।
हो जाएँ भगवन्त, निज गुण पाकर के विशद।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(ताटंक छन्द)

त्रस स्थावर भेद जीव के, सूक्ष्म और बादर गाये।
कर्मोदय से जीव भटकते, दुख अनेक भव के पाए।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि के द्वारा, अपने कर्म नशाएँगे।
क्षायिक केवलज्ञान प्राप्त कर, के हम शिवपुर जाएँगे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री त्रसस्थावरसूक्ष्मबादरजीवानां आयुआदिज्ञायक क्षायक ज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्माधर्माकाश काल अरु, पुद्गल पंच द्रव्य जानो।
पाँच अजीव द्रव्य हैं भाई, आगम से यह पहिचानो।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि के द्वारा, अपने कर्म नशाएँगे।
क्षायिक केवलज्ञान प्राप्त कर, के हम शिवपुर जाएँगे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री धर्माधर्माकाशपुद्गलादिपंचप्रकार अजीवपदार्थस्वरूपज्ञायक क्षायक ज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्रव के हैं भेद सत्तावन, भाव शुभाशुभ जो गाए।
मिथ्या अविरति योग कषाएँ, भेद सभी के बतलाए।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि के द्वारा, अपने कर्म नशाएँगे।
क्षायिक केवलज्ञान प्राप्त कर, के हम शिवपुर जाएँगे।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मिथ्यावादिसत्तावनआश्रवादिभावनां स्वरूपज्ञायक क्षायकज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीव्र मंद मध्यम कषाय के, भेद अनेकों बतलाए।
इन्हीं कषायों के कारण से, दुखी जीव जग के गाए।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि के द्वारा, अपने कर्म नशाएँगे।
क्षायिक केवलज्ञान प्राप्त कर, के हम शिवपुर जाएँगे।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तीव्रमध्यमकषाय ज्ञायक क्षायक ज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

परिषहजय व्रत गुप्ति समीती, धर्म हैं संवर के कारण।
संवर पूर्वक तप करने से, कर्मों का होता वारण।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि के द्वारा, अपने कर्म नशाएँगे।
क्षायिक केवलज्ञान प्राप्त कर, के हम शिवपुर जाएँगे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री व्रतसमितिगुप्तियुत-सत्तावन संवरभेदज्ञायक क्षायक ज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नोकर्म नाशकर, जीव सिद्धपद को पाते।
आठों कर्म विनाश शुद्ध सुख, में जाकर के रम जाते।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि के द्वारा, अपने कर्म नशाएँगे।
क्षायिक केवलज्ञान प्राप्त कर, के हम शिवपुर जाएँगे।।6।।

ॐ ह्रीं श्री द्रव्यकर्मभाव-नोकर्म आदिज्ञायक क्षायक ज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श विशुद्धी आदिक सोलह, भव्य भावनाएँ भाते।
भव्य जीव जिनचरण शरण में, तीर्थंकर पद प्रगटाते।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि के द्वारा, अपने कर्म नशाएँगे।
क्षायिक केवलज्ञान प्राप्त कर, के हम शिवपुर जाएँगे।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सोलहकारण दर्शनविशुद्धिआदि पुण्य प्रकृतियाँ शुभाशुभभावज्ञायक-क्षायक ज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च पाप का फल पा प्राणी, दुःख अनेक उठाते हैं।
भ्रमण करें चारों गतियों में, फिर निगोद में जाते हैं।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि के द्वारा, अपने कर्म नशाएँगे।
क्षायिक केवलज्ञान प्राप्त कर, के हम शिवपुर जाएँगे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपाप फल इतरनिगोद आदिज्ञायक क्षायक ज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मोन्नति करता है आतम, रत्नत्रय निधि जो पाए।
सम्यक् तप कर कर्म निर्जरा, क्षण-क्षण जो करता जाए।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि के द्वारा, अपने कर्म नशाएँगे।
क्षायिक केवलज्ञान प्राप्त कर, के हम शिवपुर जाएँगे।।9।।

ॐ ह्रीं श्री उत्कृष्टकर्मबन्धस्थिति ज्ञायक क्षायक ज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

महार्घ्य

भाव शुभाशुभ और कषाएँ, कर्माश्रव करवाते हैं।
रागद्वेष करने से कर्मों, के बन्धन बँध जाते हैं।।
संवर और निर्जरा करते, जो सम्यक् तप पाते हैं।
निज आतम को ध्याने वाले, केवलज्ञान जगाते हैं।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि के द्वारा, अपने कर्म नशाएँगे।
पावन केवलज्ञान प्राप्त कर, के हम शिवपुर जाएँगे।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- ज्ञान लब्धि को प्राप्त कर, पाएँ केवलज्ञान।
तुम चरणों में पाएँ हम, वीतराग विज्ञान।।

(ताटंक छन्द)

जब तक मिथ्याभाव स्वयं से, जीव छोड़ ना पाता है।
तब तक चारों गती भ्रमण कर, दुःख अनेक उठाता है।।

देव शास्त्र गुरु का दर्शन पा, दिव्य देशना पाता है।
सम्यक् श्रद्धा पाने वाला, सम्यक् ज्ञान जगाता है।।1।।
रागद्वेष से निवृत्ति पाने, धारण करता है चारित्र।
रत्नत्रय धारी का होता, जीवन पावन परम पवित्र।।
परद्रव्यों से राग त्यागकर, निर्विकल्प हो करता ध्यान।
भेद ज्ञान के द्वारा करता, तन में चेतन की पहिचान।।2।।
शुद्ध बुद्धि की वृद्धी करके, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रगटाता।
निर्विकल्प निश्चल समाधि से, सर्व सिद्धियाँ जो पाता।।
पूर्ण ज्ञानमय निज स्वभाव पर, जिसकी दृष्टी जाती है।
अनुभव रसमय पीयूषामृत, की वृष्टी हो जाती है।।3।।
ज्ञातादृष्टा बनकर चेतन, निज में हो जाता है लीन।
असंख्यात गुण कर्म निर्जरा, से करता कर्मों को क्षीण।।
तीन शल्य सातों भय से जब, नर विरहित हो जाता है।
ज्ञानी बनकर ज्ञान चेतना, का अनुभव तव पाता है।।4।।
विमल अतुल अविकल स्वरूप, जब पूर्ण दृष्टि में आता है।
अविनाशी परिपूर्ण अतिन्द्रिय, सुख सागर लहराता है।।
स्वसंवेदन हो प्रत्यक्ष में, प्रति समय जब आता है।
केवलज्ञान सूर्य ज्योर्तिमय, का प्रकाश छा जाता है।।5।।

दोहा- ज्ञानलब्धि क्षायिक जगे, है मेरी यह चाह।
मोक्षमार्ग की हे प्रभो !, मिले विशद अब राह।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आडिल्य छंद- प्रभु गुणमाल महान आपकी गाई है।
पूजा करने में मति यहाँ लगाई है।।
तुम चरणों की भक्ती हृदय जगाई है।
'विशद' मोक्ष की बारी मेरी आई है।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री क्षायिक चारित्र लब्धि पूजा-9

स्थापना

सम्यक् चारित पालन करके, यथाख्यात चारित पाएँ।
स्वपर प्रकाशी ज्ञान जगाकर, निज स्वरूप में रम जाएँ।।
वीतराग चारित्र जगाने, चारित लब्धी को ध्याते।
क्षायिक चारित लब्धी धारी, जिनवर की महिमा गाते।।

दोहा- विशद ज्ञानधारी प्रभु, जग में रहे महान्।
क्षायिक चारित लब्धिधर, का करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(मत्त सवैया छन्द)

हम क्षीर सिन्धु के निर्मल जल, से पूजा आज रचाते हैं।
जन्मादिक रोग नशाने को जल, चरणों नाथ चढ़ाते हैं।।
क्षायिक चारित लब्धी पाने, अब चरित मोह पर जय पाएँ।
निज शुक्ल ध्यान के द्वारा प्रभु, हम केवलज्ञान को प्रगटाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर में चन्दन घिस करके, यह गंध बनाकर लाये हैं।
संसार ताप क्षय करके प्रभु, शिवपद पाने को आये हैं।।
क्षायिक चारित लब्धी पाने, अब चरित मोह पर जय पाएँ।
निज शुक्ल ध्यान के द्वारा प्रभु, हम केवलज्ञान को प्रगटाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत यह बासमति, चरणों हे नाथ चढ़ाते हैं।
उत्तम अक्षय पद पाने को, तुम चरण शरण में आते हैं।।
क्षायिक चारित लब्धी पाने, अब चरित मोह पर जय पाएँ।
निज शुक्ल ध्यान के द्वारा प्रभु, हम केवलज्ञान को प्रगटाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

समभाव बनाकर हे स्वामी, अब काम व्याधि विनशाएँगे।
चौरासी लाख शील गुण से, हम भी सज्जित हो जाएँगे।।
क्षायिक चारित लब्धी पाने, अब चरित मोह पर जय पाएँ।
निज शुक्ल ध्यान के द्वारा प्रभु, हम केवलज्ञान को प्रगटाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

समरस के सरस सुचरु उज्ज्वल, हमने यह नाथ बनाए हैं।
चिर क्षुधा वेदना हरने को, तुम पूजा करने आए हैं।।
क्षायिक चारित लब्धी पाने, अब चरित मोह पर जय पाएँ।
निज शुक्ल ध्यान के द्वारा प्रभु, हम केवलज्ञान को प्रगटाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्ज्ञान के दीप जला उर में, हम दीपावली मनाएँगे।
मोहान्धकार को क्षय करके, अनुपम प्रकाश प्रगटाएँगे।।
क्षायिक चारित लब्धी पाने, अब चरित मोह पर जय पाएँ।
निज शुक्ल ध्यान के द्वारा प्रभु, हम केवलज्ञान को प्रगटाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम ध्यान अग्नि में धूप जला, भव ज्वाला पूर्ण नशाएँगे।
ज्ञानावरणादिक अष्ट कर्म, क्षय करके शिवपुर जाएँगे।।
क्षायिक चारित लब्धी पाने, अब चरित मोह पर जय पाएँ।
निज शुक्ल ध्यान के द्वारा प्रभु, हम केवलज्ञान को प्रगटाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चेतन गुण के उपवन में, सम्यक् सुरभी महकाएँगे।
करके भव सिन्धू पार प्रभू, अब मोक्ष महाफल पाएँगे।।
क्षायिक चारित लब्धी पाने, अब चरित मोह पर जय पाएँ।
निज शुक्ल ध्यान के द्वारा प्रभु, हम केवलज्ञान को प्रगटाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं अष्ट गुणों सम द्रव्य आठ, उनसे यह अर्घ्य बनाते हैं।
पाने अनर्घ्य पद हे स्वामी, चरणों में आज चढ़ाते हैं।।
क्षायिक चारित लब्धी पाने, अब चरित मोह पर जय पाएँ।
निज शुक्ल ध्यान के द्वारा प्रभु, हम केवलज्ञान को प्रगटाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मंगलमय जीवन बने, महिमामयी महान।
शांतीधारा दे रहे, होकर श्रद्धावान।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा– जीवन पाया आपसे, करो एक उपकार।
पुष्पाञ्जलि करते चरण, पाने शिव का द्वार।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

अर्घ्यावली

सोरठा– अर्घ्य चढ़ाते भाव से, करने निज कल्याण।
क्षायिक चारित लब्धि का, होय लाभ भगवान।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(जोगीरासा छन्द)

पञ्चेन्द्रिय के पञ्च विषय की, आशाएँ हरना है।
चारित लब्धी प्राप्ति हेतु, चारित्र सुदृढ़ करना है।।
क्षायिक चारित लब्धी पाकर, विशद ज्ञान पाना है।
छोड़ के जग जंजाल हमें अब, सिद्ध शिला जाना है।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पंचेन्द्रियविषयभोगविरक्तभावधारी क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रस थावर एकेन्द्रिय आदिक, जीव लोक में गाए।
कर्मों का फल पाते प्राणी, देह धारते आए।।
क्षायिक चारित लब्धी पाकर, विशद ज्ञान पाना है।
छोड़ के जग जंजाल हमें अब, सिद्ध शिला जाना है।।2।।

ॐ ह्रीं श्री एकेन्द्रियादि त्रसस्थावरजीवानां अनुकंपाभावधारी क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग रहे सावद्य जगत के, उन सबको अब तजिए।
तीन योग से सामायिक कर, श्री जिनवर को भजिए।।
क्षायिक चारित लब्धी पाकर, विशद ज्ञान पाना है।
छोड़ के जग जंजाल हमें अब, सिद्ध शिला जाना है।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वसावद्यभोगविरतिप्राप्त सामायिकचारित्रप्राप्त क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भित पाप कषाएँ भाई, हैं प्रमाद में सारी।
छेदोपस्थापना चारित पाकर, बनो संत अनगारी।।
क्षायिक चारित लब्धी पाकर, विशद ज्ञान पाना है।
छोड़ के जग जंजाल हमें अब, सिद्ध शिला जाना है।।4।।

ॐ ह्रीं श्री छेदोपस्थापनाचारित्रप्राप्त क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

षट्कायिक जीवों की रक्षा, जिसमें पूर्ण बताई।
मुनि परिहार विशुद्धी चारित, धारी पाते भाई।।
क्षायिक चारित लब्धी पाकर, विशद ज्ञान पाना है।
छोड़ के जग जंजाल हमें अब, सिद्ध शिला जाना है।।5।।

ॐ ह्रीं श्री परिहारविशुद्धिचारित्रप्राप्त क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सर्व कषायों रहित जीव को, सूक्ष्म लोभ रह जाए।
सूक्ष्म साम्पराय चारित अनुपम, श्रेष्ठ यही कहलाए।।
क्षायिक चारित लब्धी पाकर, विशद ज्ञान पाना है।
छोड़ के जग जंजाल हमें अब, सिद्ध शिला जाना है।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मसाम्परायचारित्रप्राप्त क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सर्व कषाएँ उपशम या क्षय, करते हैं जब ज्ञानी।
यथाख्यात चारित्र उन्हें हो, कहती है जिनवाणी।।
क्षायिक चारित लब्धी पाकर, विशद ज्ञान पाना है।
छोड़ के जग जंजाल हमें अब, सिद्ध शिला जाना है।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पंचेन्द्रियविषयविरक्तभावधारी यथाख्यातचारित्रप्राप्त क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज चेतन में रमने वाले, निश्चय चारितधारी।
नयातीत पक्षातिक्रान्त हो, जाते वह अनगारी।।
क्षायिक चारित लब्धी पाकर, विशद ज्ञान पाना है।
छोड़ के जग जंजाल हमें अब, सिद्ध शिला जाना है।।8।।

ॐ ह्रीं श्री निश्चयचारित्रप्राप्त क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चार घातिया कर्म नशाकर, जो अर्हत् पद पाते।
वह सम्यक् चारित्र प्राप्त जिन, सिद्ध लोक को जाते।।
क्षायिक चारित लब्धी पाकर, विशद ज्ञान पाना है।
छोड़ के जग जंजाल हमें अब, सिद्ध शिलाजाना है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रप्राप्त क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

महार्घ्य

जब तक भेद ज्ञान यह प्राणी, नहीं स्वयं कर पाता है।
तब तक पर द्रव्यों को अपना, मान उन्हें अपनाता है।।
शुद्ध स्वभाव ज्ञानमय अपना, जान स्वयं में रम जाए।
आत्म ज्ञान चारित्र प्राप्त कर, 'विशद' ज्ञान नर प्रगटाए।।
निर्विकल्प समरसी भावमय, शुद्ध आत्मा ही है श्रेय।
निज से भिन्न पदार्थ सभी हैं, तीन लोक के भाई हेय।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- चारित लब्धी प्राप्त कर, पाना सौख्य स्वरूप।
चिदानन्द आनन्द घन, निज चेतन चिद्रूप।।

(वीर छन्द)

कर्म मलों को क्षय करने में, भाव तीर्थ ही रहा समर्थ।
सम्यक् दर्शन रहित तपस्या, व्रत संयम का लेश न अर्थ।।

तीन लोक में श्रेष्ठ बताया, एक आत्मा का श्रद्धान।
जिसके द्वारा पाते प्राणी, तन चेतन का भेद विज्ञान।।1।।

सम्यक् दर्शन हो जाते ही, प्रकट होय सम्यक् चारित्र।
हो सम्यक्त्वाचरण जीव को, शिव का कारण रहा पवित्र।।
देशव्रतों को फिर पाकर के, अणुव्रती हो जाये जीव।
क्रमशः प्रतिमाएँ धारण कर, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव।।2।।

ग्यारह प्रतिमाधारी होकर, क्षुल्लक ऐलक पद पाए।
महाव्रती बनने का भाई, जो अभ्यासी कहलाए।।
पश्च महाव्रत पाँच समीती, तीन गुप्तियाँ परम पवित्र।
श्रमण मुनी पालन करते हैं, यह तेरह प्रकार चारित्र।।3।।

छठे सातवें गुणस्थान में, मुनिवर रहकर करते ध्यान।
जैनागम में साधू चर्या, का बतलाया यही विधान।।
मुनि कषाय अनन्तानुबन्धी, मुनि फिर करें विसंयोजन।
तीन करण परिणाम के द्वारा, करते श्रेणी आरोहण।।4।।

क्रमशः श्रेणी पर चढ़ करके, करते हैं कर्मों का नाश।
मुनिवर काण्डक घात के द्वारा, करें कर्म का शीघ्र विनाश।।
शुक्ल ध्यान के द्वारा मुनिवर, मोहनीय का करके क्षय।
अनन्त चतुष्टय का विनाश कर, 'विशद' ज्ञान पाते अक्षय।।5।।

घत्ता छंद- प्रभु चारित्र लब्धी, की उपलब्धी, प्राप्त हमें हो हे स्वामी।
संयम शुभ पाकर, ज्ञान जगाकर, बने मोक्ष के पथगामी।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारक जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सम्यक् चारित के धनी, पाते केवलज्ञान।
चारित्र लब्धी प्राप्त जिन, जग में कहे महान।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- नवलब्धी शिवमार्ग में, जानो उत्तम ढाल।
क्षायिक लब्धि विधान की, गाते हैं जयमाल।।

ज्ञानोदय छन्द

अतिशय महिमावंत जिनेश्वर, गुणानन्त पाते स्वामी।
सर्व चराचर के जो ज्ञाता, होते हैं शिवपथगामी।।
रागादिक सब दोष मुक्त जिन, ध्यान रहा जिन का शुभकार।
भवि जीवों को भवसिन्धू में, प्रभू आप हो इक आधार।।1।।
गुण गाते वचनों के द्वारा, पर प्रभु वचन अगोचर हैं।
भक्ति आपकी शिवफलदायी, दर्शन महा मनोहर हैं।।
स्तुति गाये भक्ति भाव से, अतिशय पुण्य कमाता है।
मोक्ष महल का राही वह भी, अतिशीघ्र बन जाता है।।2।।
श्रेष्ठ रहे प्रभुवर इस जग में, ऋषि मुनि शीश झुकाते हैं।
बिन बोले आशीष बिना भी, भव्य जीव फल पाते हैं।।
गुण को माप सके ना कोई, जिनवर अमित कहाते हैं।
कल्पतरू समभक्त शरण में, इच्छित फल शुभ पाते हैं।।3।।
कीर्ति आपकी मंगलमय है, मंगलमय है पावन नाम।
चर्चा अर्चा भी मंगल है, सिद्धशिला है मंगल धाम।।
पाप विनाशक सौख्य प्रदायक, दर्शन कर होवे जीवन।
प्रभू नाम की औषधि अनुपम, भव्यों को है संजीवन।।4।।
सकल मोह क्षय करने वाले, होते लब्धी के स्वामी।
केवलज्ञान जगा करके जो, बन जाते अन्तर्यामी।।
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, पाते क्षायिक ज्ञान विशेष।
कर्म दर्शनावर्णी नाशी, दर्शन लब्धी पाएँ जिनेश।।5।।
मोहकर्म के नाशी होकर, सम्यक् चारित्र लब्धीवान।
अन्तराय के नशते लब्धी, पाँच प्रकट करते भगवान।।

सर्व कर्म का नाश करें फिर, बन जाते हैं सिद्ध महान।
ज्ञान शरीर होकर करते, निजानन्द गुण का रसपान।।6।।
रागद्वेष कर भव-भव में हम, कर्म बन्ध कर दुख पाए।
क्षमासिन्धु अब आप सहारे, पूजा करने को आए।।
तन में श्वाँस रहे जीवन यह, प्रभू आपका ध्यान करें।
कर्म निर्जरा करके आपने, कर्म अनादिक पूर्ण हरें।।7।।

दोहा- शिवपथ के राही बने, किया स्वयं कल्याण।
अतः आपकी अर्चना, करें श्रेष्ठ धीमान।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- जन्म जरा मृतु रोगहर, उत्तम वैद्य स्वरूप।
मेरी भव व्याधी हरो, नाथ भिषग्वरभूप।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

आरती

(तर्ज-इह विधि मंगल आरति...)

लब्धी धर की आरति गाएँ, नर भव अपना सफल बनाएँ।
दान लब्धि शुभ पाने वाले, केवलज्ञानी रहे निराले।। लब्धीधर. ।।1।।
लाभ लब्धी की महिमा न्यारी, होते अर्हत् पद के धारी।।2।।
क्षायिक भोगलब्धि जो पावें, वे जिन केवलज्ञान जगावें।।3।।
प्रभु उपभोग लब्धि शुभ पाते, वे जिन मोक्षमहल को जाते।।4।।
वीर्य लब्धि जो मुनि प्रगटाते, केवलज्ञानी जिन कहलाते।।5।।
शुभ सम्यक्त्व लब्धि शुभ गाई, जिनवर पाते हैं शिवदायी।।6।।
चारित लब्धी पाके स्वामी, बने मोक्षपथ के अनुगामी।।7।।
क्षायिक ज्ञान लब्धि जिन पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए।।8।।
क्षायिक दर्शन लब्धि जगाएँ, वे जिन मोक्षमहल को जाएँ।।9।।
'विशद' भावना यही हमारी, बन जाएँ शिव के अधिकारी।।10।।

प्रशस्ति

जम्बूद्वीप रहा शुभकार, भरतक्षेत्र जिसमें मनहार।
आर्यखण्ड में भारत देश, जिसमें गाया मध्य प्रदेश।।
जिला छतरपुर जिसमें भ्रात, ग्रामकुपी अनुपम विख्यात।
जहाँ थे सेठ भरोसेलाल, जिनकी महिमा रही विशाल।।
जिनके छोटे पुत्र का नाम, लोग बताते नाथूराम।
ग्रहणी इन्दर देवी नाम, सद्ग्रहस्थ रह करती काम।।
जिनके द्वितीय पुत्र रमेश, धर्म कार्य जिनका उद्येश्य।
गुरु विराग सागर महाराज, जिन पर करती दुनियाँ नाज।।
जाकर पहुँचे उनके पास, पूर्ण करो गुरु मेरी आस।
दीक्षा दो हमको गुरुदेव, भक्त चरण के बने सदैव।।
मगसिर शुक्ल पञ्चमी जान, सम्वत् बीस सौ इक्किस मान।
ऐलक दीक्षा धरे रमेश, बन गये श्रावक श्रेष्ठ विशेष।।
फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी बार, बीस सौ पैंसठ दिन शनिवार।
सिद्धक्षेत्र द्रोणागिर आन, पाए मुनिपद जहाँ प्रधान।।
गुरु विराग का पा आशीष, पाए पद आचार्य मुनीश।
भरत सिन्धु गुरुवर आचार्य, ने कीन्हें जिनके संस्कार।।
मालपुरा में राजस्थान, आप बने आचार्य महान्।
कई प्रदेश में किए विहार, धर्म साधना किए अपार।।
किए साथ में लेखन आप, प्रवचन आदिक कीन्हें जाप।
पूजा करके सब धीमान, पुण्य उपावें श्रेष्ठ महान्।।
नव लब्धी यह रचा विधान, धर्मपुरा दिल्ली में आन।
तेईस मई सन् तेरह जान, विशद हमारा हो कल्याण।।

।। इति ।।